श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ खुलासा ❖

किताब खुलासा वानी हकी सूरत फजर की ।
रूहें अर्स की दिल दे देखो ।।

खुलासा फुरमान का

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए ।
किए हादी ने जाहेर, याही मगज[१] मुसाफ[२] के ।।१।।
ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमिन करें विचार ।
रूहें हक सूरत दिल में लई, छोड़ी दुनियाँ कर मुरदार ।।२।।
चौदे तबक होसी कायम, इन नुकते इलम हुकम ।
हक अर्स वाहेदत[३] में, हुआ रोसन दिन खसम ।।३।।
बड़ाई नुकते इलम की, कहूं जाहेर न एते दिन ।
खोले द्वार खिलवत के, एही कुन्जी बका वतन ।।४।।
खुले द्वार सब अर्सों के, एही रूह अल्ला इलम ।
एही लदुन्नी खुदाई, ए कौल हक हुकम ।।५।।
ए कलाम आए हक से, ए नुकता कह्या जे ।
ए जानें विचारें मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए ।।६।।
किया बेवरा इन वास्ते, उतरे अर्स से रूहें फरिस्ते ।
मोमिन मुतकी[४] ए सुन के, रेहे न सकें जुदे ।।७।।

१. भेद । २. कुरान । ३. एक दिली का मुकाम । ४. ईश्वरी सृष्टि ।

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरिफ करें न सहूर ।
रूहें फरिस्ते और दुनियाँ, ए लिख्या तीनों का मजकूर[1] ।।८।।

देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए ।
रूहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियाँ खुदा हवाए ।।९।।

ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत ।
बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत ।।१०।।

नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन[2] ।
कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन ।।११।।

ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत ।
रूहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत ।।१२।।

ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान ।
सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान ।।१३।।

जाहेर सिपारे आठमें, लिख्या पैदा आदम हवाए ।
अबलीस[3] लिख्या दुनी नसलें, और दिल पर ए पातसाह ।।१४।।

भया निकाह[4] आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस ।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस ।।१५।।

तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे ।
सो फैल[5] कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके[6] ।।१६।।

पैदास बीच अबलीस कह्या, ए जो आदम की नसल ।
पूजे हवा को खुदा कर, दुनियां एह अकल ।।१७।।

कह्या कुलफ[7] आड़े ईमान के, हवाई का देख ।
दुनी का लिख्या बेवरा, सो ए कहूं विवेक ।।१८।।

राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम ।
सो जानो दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम ।।१९।।

१. बेवरा । २. ईश्वरी सृष्टि । ३. शैतान, दज्जाल । ४. शादी, संबन्ध । ५. कर्म । ६. संप्रदाय, पंथ । ७. ताला ।

कह्या सिजदा आदम पर, अजाजीलें फेर्‌या फुरमान ।
सो लिखी लानत सबन को, जो औलाद आदम जहान ॥२०॥

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान ।
पातसाही अबलीस दिल पर, जो करत है सैतान ॥२१॥

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत ।
ढूंढ़ें दज्जाल को बाहेर, पावें ना लिखी इसारत ॥२२॥

अबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर ।
ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर ॥२३॥

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत[१] अजाजील[२] ।
राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील ॥२४॥

बुरका हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक ।
दे कुलफ आड़े ईमान के, किए सब हवा के तअलुक[३] ॥२५॥

तोड़ हवा कुलफ ले ईमान, सोई कह्या सिरदार ।
हवा तरक[४] कर लेवे तौहीद[५], ए बल पैगंमरी हुसियार ॥२६॥

पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस ।
लेने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस ॥२७॥

सिपारे आठमें मिने, जहूद[६] नसारे[७] जुदे पड़े ।
त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े ॥२८॥

कह्या अर्स दिल महंमद का, ए पूजें सब पत्थर ।
माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर ॥२९॥

लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह ।
लोक ढूंढ़े बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे[८] अपनी राह ॥३०॥

आकीन न रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत ।
तो आकीन उठ्या सबन से, जो आए पोहोंची सरत ॥३१॥

१. वैकुंठ । २. विष्णु । ३. सम्बन्ध । ४. छोडना । ५. एक अद्वैतवाद । ६. यहूदी । ७. ईसाई (मिसर देश की जनता) । ८. आधीन ।

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत[१] ।
लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें ना पोहोंची कयामत ॥३२॥

दिल मोमिन अर्स कह्या, कह्या दुनी दिल सैतान ।
ए जाहेर इन बिध लिख्या, आरिफ[२] क्यों न करें बयान ॥३३॥

जो कोई दुनियाँ कुंन से, आए न सके मांहें अर्स ।
जो रूहें फरिस्ते उतरे, सोई अर्सों के वारस ॥३४॥

रूहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदा ही चलन ।
दुनियाँ राह क्यों ले सके, जिन राह मह होवें मोमिन ॥३५॥

मोमिन रूहें करें कुरबानियाँ, और मता वजूद समेत ।
छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन हेत ॥३६॥

अर्स कह्या दिल मोमिन, कोई एता न करे सहूर ।
आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर ॥३७॥

दुनी दिल पर अबलीस[३], दिल मोमिन अर्स हक ।
कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक ॥३८॥

ए देखें दिल अर्स मोमिन, अर्स हक बिना होए क्यों कर ।
एह विचार तो न करे, जो कुलफ[४] कहे दिलों पर ॥३९॥

बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अर्स में तन ।
यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अर्स दिल मोमिन ॥४०॥

पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ ।
कह्या दरिया हैवान[५] का, समझ ना करे एक हरफ ॥४१॥

होए भोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक ।
कुरान बतावे बका मोमिन, पर दुनियाँ अपनी मत माफक ॥४२॥

इत सहूर दुनी का ना चले, सुरिया[६] छोड़े ना इनों अकल ।
सरभर[७] करे मोमिन की, जिनकी अर्स असल ॥४३॥

१. विरासत संबंधी आदेश पत्र, उत्तराधिकार पत्र । २. विद्वान, इलम के जानकार एवं परमात्मा को पहचाननेवाले ।
३. नारद । ४. ताला । ५. पशुत्व - जानवर । ६. ज्योति सरुप । ७. बराबरी ।

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ ।
डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत जमात ॥४४॥

पेहेचान नहीं मोमिन की, जिनमें अहमद सिरदार ।
जो रूहें कही दरगाह[१] की, बीच बका बारे हजार ॥४५॥

ढूंढ़ पाए ना पकड़े मोमिन के, पर हुआ हक हाथ सहूर ।
जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर ॥४६॥

दिल मोमिन अर्स कह्या, बड़ा बेवरा किया इत ।
दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत ॥४७॥

दुनी न छोड़े तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी ।
दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल धरी ॥४८॥

राह दोऊ जुदी पड़ी, दोऊ एक होवें क्योंकर ।
तरक[२] करी जो मोमिनों, सो हुआ दुनी का घर ॥४९॥

मोमिन उतरे अर्स से, सो अर्स बिलंदी नूर ।
ए जो रूहें कहीं दरगाह की, हक वाहेदत जिनों अंकूर ॥५०॥

रूहें अर्स अजीम[३] की, जाकी हक हादी सों निसबत ।
ए हमेसा बीच अर्स के, हक जात वाहेदत ॥५१॥

रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन ।
बड़ी दरगाह अर्स अजीम की, जित असल रूहों के तन ॥५२॥

ए हुकमें कजा[४] करी, अव्वल से आखिर ।
हक अर्स मता मोमिन का, लिया सब फिरकों दावा कर ॥५३॥

करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन ।
वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमिन ॥५४॥

मोमिनों के माल का, दावा किया सबन ।
तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स दिन ॥५५॥

१. पूज्य स्थान । २. छोड़ना । ३. महान, परमधाम । ४. न्याय ।

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान ।
दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए पेहेचान ॥५६॥

अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन ।
ए सब होसी जाहेर, ऊगे कायम सूरज दिन ॥५७॥

रूहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत ।
ए जाने अर्स अरवाहें, जिन मोमिनों निसबत ॥५८॥

और गिरो फरिस्तन की, जिनका कायम वतन ।
दुनियां कायम होएसी, सो बरकत गिरो इन ॥५९॥

और जो उपजे कुंन से, जो आदम की नसल ।
दावा किया मोमिन का, जो दुस्मन अबलीस असल ॥६०॥

लिख्या सिपारे चौदमें, गिरो भांत है तीन ।
महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन ॥६१॥

किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत[१] तरीकत[२] हकीकत[३] ।
हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत ॥६२॥

हकीकत सों समझावना, समझे इसारत सों मोमिन ।
हक सूरत दृढ़ कर दई, तब दिल अर्स हुआ वतन ॥६३॥

और राह जो तरीकत, गिरो फरिस्तों बंदगी कही ।
सो समझे मीठी जुबांन सों, समझ पोहोंचे जबरूत[४] सही ॥६४॥

तीसरी गिरो सरीयत से, जो करसी जेहेल[५] जिदाल[६] ।
सो समझेंगे जिद्दैसों[७], क्या करें पड़े बंध दज्जाल ॥६५॥

ए पढ़े सब जानत हैं, दिल पर दुस्मन पातसाह ।
ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह ॥६६॥

कुरान पढ़े चलें सरीयत, करें दावा मोमिनों राह ।
पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा ॥६७॥

१. कर्म । २. उपासना । ३. ज्ञान । ४. अक्षरधाम । ५. मूर्ख - कम अकल । ६. वाद-विवाद । ७. जिद - हठ ही से ।

मोमिन दुनी ए तफावत[१], ज्यों खेल और देखनहार ।
मोमिन मता हक वाहेदत[२], दुनियां मता मुरदार ॥६८॥

सबों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान ।
वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूं पेहेचान ॥६९॥

कह्या दावा सब का तोड़्या, दिया मता मोमिनों को ।
लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों ॥७०॥

सिपारे सताईस में, लिखे दुनी के सुकन ।
ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद[३] आब बिन ॥७१॥

मोको पाक होए सो छूइयो, यों केहेवे फुरमान ।
करे गुसल तौहीद आब[४] में, इन पाकी पकड़ो कुरान ॥७२॥

सो पाक कहे रूह मोमिन, जिनको तौहीद मदत ।
सो पीठ देवें दुनीय को, जिनपे मुसाफ मारफत ॥७३॥

सो सरीयत को है नहीं, ए तो खड़े जाहेर ऊपर ।
एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर ॥७४॥

लिख्या कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत ।
एक दीन जब होवहीं, दोऊ तब होवे साबित ॥७५॥

महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत ।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत ॥७६॥

एक फिरका नाजी कह्या, जित लिखी हक हिदायत[५] ।
एक दीन किया चाहे, एही मोमिन वाहेदत ॥७७॥

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत ।
होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत[६] ॥७८॥

इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन ।
हक सूरत दृढ़ कर दई, देसी सबों आकीन ॥७९॥

१. फर्क । २. एकत्व - अद्वैत । ३. अनन्य - अद्वैत भक्ति - जल । ४. पानी । ५. आदेश । ६. सिफारिश ।

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद ।
पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद ॥८०॥

हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब ।
सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम, जाको हकें कह्या मेहेबूब ॥८१॥

मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन मांहें खिलवत ।
उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत ॥८२॥

महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अर्स दिल मोमिन ।
सो अर्स दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुंन ॥८३॥

अबलीस कह्या दुनी दुस्मन, तो किया मोमिनों मता का दावा ।
सो समझे न इसारतें, जिन ताले अबलीस हवा ॥८४॥

जोस गिरो मोमिनों पर, हकें भेज्या जबराईल ।
रूहें साफ रहें आठो जाम, और अबलीस दुनी दिल ॥८५॥

अर्स से आया असराफील[1], दिया कई बिध सूर बजाए ।
सो सोर पड़्या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए ॥८६॥

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, पाया अर्स खिताब ।
इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब ॥८७॥

फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम ।
खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजे खसम ॥८८॥

जो लिख्या जिन ताले मिने, मांहें हक फुरमान ।
रूहें फरिस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान ॥८९॥

बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियां और अर्स हक ।
हक अर्स में सब कह्या, दुनियां नहीं रंचक[2] ॥९०॥

और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियां और मोमिन ।
दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन ॥९१॥

१. अक्षर की बुद्धि । २. जरा मात्र ।

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने ।
ऐसे कई पैदा होत हैं, कोई कायम न इनों में ॥९२॥

साँच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए ।
हक मोमिन बिन दुनियाँ, बैठी कुफर खेल बनाए ॥९३॥

जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन ।
खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमिन ॥९४॥

दुनियां दिल पर अबलीस, तो राह पुलसरात[१] कही ।
वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भांत दोजख भई ॥९५॥

भिस्त दई तिन को, जो हुते दुस्मन ।
सबों लई थी हुज्जत[२], हम वारसी ले मोमिन ॥९६॥

मेहेर हुई दुनियां पर, पाई तिनों आठों भिस्त ।
बीज[३] बुता[४] कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत[५] ॥९७॥

मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर ।
दोऊ गिरो दोऊ अर्सों, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर ॥९८॥

कोइ आए न सके अर्स में, जाकी नसल आदम निदान ।
दई हैयाती[६] सबन को, मेहेर कर सुभान ॥९९॥

करें हिंदू लड़ाई मुझ से, दूजे सरीयत मुसलमान ।
पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ो नहीं फुरकान ॥१००॥

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग ।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग ॥१०१॥

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम ।
दिया महंमद मेंहेदी ने, गिरो मोमिनों हाथ हुकम ॥१०२॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥१०२॥

१. पुल-सरात (ऊंचा रास्ता अर्थात् धर्म के मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है) ।
२. दावा । ३. अंकूर । ४. अस्तित्व । ५. भाग्य चमकाना । ६. अमृत्व ।

खुलासा गिरो दीन का

ए देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान ।
हक हादी गिरो अर्स की, सक भान कराऊँ पेहेचान ।।१।।

हक सूरत हादी साहेद[१], मसहूद[२] है उमत ।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत ।।२।।

हक बका में जेता मता, सो छिपे ना मोमिनों से ।
खेल में आए तो भी अर्स दिल, ए लिख्या फुरमान में ।।३।।

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार ।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार ।।४।।

एक जाहेर किए बसरिएँ, दूजे रखे मलकी पर ।
तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर ।।५।।

कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत[३] हक ।
किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक ।।६।।

राह चलाई बसरिएँ फुरमानें, दई कुंजी मलकी हकीकत ।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत ।।७।।

ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत ।
मता सब[४] मेयराज[४] का, करी जाहेर गुझ खिलवत ।।८।।

ए जो कागद वेद कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन ।
दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो अठारे बरन ।।९।।

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान ।
ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान[५] ।।१०।।

कह्या महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद ।
फिरवले[६] सबन पर, महंमद के सब्द ।।११।।

१. साक्षी । २. मौजूद, उपस्थित । ३. कृपा । ४. साक्षात्कार की रात्रि । ५. माफक । ६. फैल गए (प्रगट हुए)।

इत मुनाफक खतरा ल्यावते, जो कुराने कही कयामत ।
सो खास रूहें मोमिन आए, जाके दिल अर्स न्यामत ॥१२॥

ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद ।
सहूर ना करे बातून, कोई न देखे छोड़ हद ॥१३॥

ए दुनियाँ किन पैदा करी, कौन ल्याया हूद[1] तोफान ।
किन राखी गिरो कोहतूर[2] तले, किन डुबाई सब जहान ॥१४॥

किन फेर दुनी पैदा करी, फेर कौन ल्याया नूह[3] तोफान ।
किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान ॥१५॥

तीन बेटे नूह नबीय के, बेर तीसरी दुनी इनसे ।
हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें ॥१६॥

कह्या स्याम बाप उन लोकों का, रूम फारस आरबन ।
सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन ॥१७॥

कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान ।
ना पावें महंमद गिरो को, जो सौ साल पढ़े कुरान ॥१८॥

ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल ए आखिर ।
बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर ॥१९॥

एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊँ[4] ।
सो दुनियां में या बिना, कोई नहीं कित काऊँ[5] ॥२०॥

ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर मांहें जहूदन ।
गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन ॥२१॥

सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक ।
सबको बंदगी याही की, पीछे लड़े बिन पाए विवेक ॥२२॥

रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हुकमें उतरे बेर तीन ।
सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन ॥२३॥

१. नंदजी । २. गोवर्धन पहाड़ । ३. वसुदेव । ४. नाम । ५. कहीं भी ।

एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर ।
तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर ॥२४॥

जाहेर पहचान कही रसूले, गिरो खासी और कयामत ।
सहूर करें दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत ॥२५॥

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक ।
लैलत कदर का टूक तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक ॥२६॥

सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार ।
अग्यारै सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार ॥२७॥

रूहें गिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत ।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज[1] कयामत ॥२८॥

जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत ।
अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत ॥२९॥

आए वसीयत नामें मक्के से, उठ्या कुरान दुनी से बरकत ।
सो अग्यारै सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत ॥३०॥

झण्डा ईसे मेहेंदी ने, खड़ा किया है जित ।
सो आई इत न्यामतें, हक हकीकत मारफत ॥३१॥

कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान ।
सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिन्दू या मुसलमान ॥३२॥

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर ।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर ॥३३॥

देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान ।
राख लई गिरो पनाह में, डुबाए दई सब जहान ॥३४॥

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिर्‌या बुतखाने[2] का ।
तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा ॥३५॥

१. कल का दिन । २. मंदिर ।

अब देखो माजजा रब आखिरी, सब उठाए सिजदे ठौर ।
रोसन हुआ दिन अर्स बका, कोई ठौर रही ना सिजदे और ॥३६॥

सिपारे ओगनतीस में, इन विध लिखे कलाम ।
अर्स बका पर सिजदा, करावसी इमाम ॥३७॥

और आगे बुत[1] बोले हुते, सांचा आखिरी पैगंमर ।
फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर ॥३८॥

अब बेत अल्ला पुकारत, भेजी साहेदी नामे वसीयत ।
तो भी दुनी ना देखहीं, जो ऐसे सौं[2] खाय लिखे सखत ॥३९॥

मक्के मदीने दीन का, खड़ा था निसान ।
सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान ॥४०॥

तो जोरा किया दज्जाल ने, लोकों छुड़ाए दिया आकीन ।
अग्यारै सदी के आखिर, रह्या न किन का दीन ॥४१॥

गजब हुआ दुनी पर, खैंच लिया फुरमान ।
हादी भेजे नामे वसीयत, इत रह्या न किनों ईमान ॥४२॥

आए देव फुरमाए हक के, बीच हिंदुस्तान ।
करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान ॥४३॥

आया बीच हिंदुअन के, मुसाफ हक हुकम ।
सो खलक रानी[3] गई, जिन छोड़े हक हादी कदम ॥४४॥

फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन ।
सो प्रगट्या अपने समें पर, हुआ हिंदुओं में रोसन ॥४५॥

परमहंस जाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखण्ड ।
कुली कालिंगा मारिया, मुक्त दई ब्रह्मांड ॥४६॥

झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन ।
दाभा[4] जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेंहेदी मोमिन ॥४७॥

१. मूर्ति वत् पत्थर दिल वाले। २. कसम । ३. रद् । ४. पशु ।

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान ।
तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान ॥४८॥

यों अर्स गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान ।
किन पाई न सुध रूहें अर्स की, आप अपनी आए करी पेहेचान ॥४९॥

एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा कयामत ।
जाहेर देखावे नामे वसीयत, कछू छिपी न रही हकीकत ॥५०॥

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात[१] ।
छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात ॥५१॥

नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत ।
तिन पर हवा जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत ॥५२॥

बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से ।
हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने ॥५३॥

सो जबराईल[२] जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए ।
नूरतजल्ला[३] की तजल्ली, पर जलावत ताए ॥५४॥

जबरूत[४] ऊपर अर्स लाहूत[५], इत महंमद पोंहोंचे हजूर ।
रद बदल बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर ॥५५॥

ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती[६] क्यों समझाए ।
मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरातें अटकाए ॥५६॥

जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए ।
एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए ॥५७॥

दुनियां चौदे तबक में, किन सुरिया[७] उलंघी ना जाए ।
फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए ॥५८॥

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन ।
तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन ॥५९॥

१. करम कांड का रास्ता । २. अक्षर का जोश । ३. अक्षरातीत । ४. अक्षरधाम । ५. परमधाम । ६. मृत्युलोक ।
७. ज्योति स्वरुप और शून्य मण्डल ।

करी महंमदें मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार ।
जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार ॥६०॥

ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के ।
सोई सब्द सुन पकड़्या, आगूं काफर केहेते थे जे ॥६१॥

तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर ।
कौल महंमद रद होत है, जो हक सों किया मजकूर ॥६२॥

जासों पाई बुजरकी महंमदें, हक मिले के सुकन ।
सो सुकन टूटत है, कर देखो दिल रोसन ॥६३॥

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नांहें ।
केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें ॥६४॥

कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे परत ।
कुरान माजजा[1] मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित ॥६५॥

तुम करत मुझसे दुस्मनी, मैं किया चाहों एक राह ।
तो जुदे परत कई दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह ॥६६॥

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें ।
लड़ फिरके जुदे हुए, जो बुजरक कहावें दीन माहें ॥६७॥

आए रसूलें हक जाहेर किया, किया अर्सों का बयान ।
हौज जोए बाग कई बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान ॥६८॥

कहावें फिरके बुजरक, हुए आप में दुस्मन ।
महंमद मता अर्स बका, लिया जाए न हवा के जन ॥६९॥

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो महंमद औरों बराबर ।
दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैगंमर ॥७०॥

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक ।
हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक ॥७१॥

१. करामात ।

जाहेर राह मारे दुस्मन, अबलीस[1] दिलों पर ।
जाहेरी इलमें नफा न ले सके, पेहेचान होए क्यों कर ॥७२॥

बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत ।
तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनो बका खिलवत ॥७३॥

देसी हकीकत सब अर्सों की, नूर जमाल सूरत ।
केहेसी निसबत वाहेदत, रखे न खतरा बीच खिलवत[2] ॥७४॥

सरत करी जो रसूले, सो पोहोंच्या आए बखत ।
तिन इमाम को न समझे, जिन पे कुंजी कयामत ॥७५॥

बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेंहेंदी इमाम ।
मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम ॥७६॥

कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित होवें तब ।
दज्जाल मार के एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब ॥७७॥

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी ।
मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी ॥७८॥

मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब ।
फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब ॥७९॥

तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के ।
हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे ॥८०॥

हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए ।
सो अर्स मता हक खिलवत, जाहेर करसी आए ॥८१॥

मता सब मेयराज का, किया अर्स में हकें मजकूर[3] ।
जो मेहेर हमेसा मुझ पर, सो ए सब करसी जहूर ॥८२॥

और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर ।
होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर ॥८३॥

१. विष्णु का मन । २. एकान्त स्थान । ३. बातें (वार्तालाप) ।

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, खुलें ना बिना खिताब ।
गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब ॥८४॥

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए ।
कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए ॥८५॥

अर्स कह्या दिल मोमिन, सब अर्स में न्यामत ।
कह्या और दिलों पर अबलीस, अब देखो तफावत ॥८६॥

मोमिन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक ।
महंमदें मोमिनों राह ए दई, ए राह क्यों ले हवाई खलक ॥८७॥

महामत कहे ए मोमिनों, राह बका ल्योगे तुम ।
जिन का दिल अर्स कह्या, औरों ना निकसे मुख दम ॥८८॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥१९०॥

खुलासा मेयराज का

हक हादी रूहन सों, जो किया कौल अव्वल ।
ए खुलासा मेयराज का, जो रूहों हुई रदबदल ॥१॥

कौल[1] अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब ।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब ॥२॥

तब वले कह्या अरवाहों ने, अर्स से उतरते ।
किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए ॥३॥

तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को ।
याद राखियो आप में, इत मैं भी साहेद हों ॥४॥

और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल ।
फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल ॥५॥

मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल ।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल ॥६॥

१. वचन ।

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान ।
वले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान ।।७।।

उतर आए नासूत में, भूल गए अर्स की ।
इत पैदा फना के बीच में, जाने हम हमेसगी[1] ।।८।।

अर्स रूहें भूली नासूत में, इनसों हक हादी निसबत[2] ।
ताए लिख भेज्या फुरमान में, अजूं सोई है साइत ।।९।।

हाए हाए ए समया क्यों न रह्या, ए कैसा भोम का बल ।
तो कह्या सिखरा[3] सींग पर, रेहे न सके एक पल ।।१०।।

आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ ।
फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ ।।११।।

खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल ।
अब सीधा क्यों ए न होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल ।।१२।।

कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर ।
दिया इलम लदुन्नी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर ।।१३।।

देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर ।
भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दई अपनी आमर[4] ।।१४।।

हुकम दिया दिल अर्स किया, हकें कह्या महंमद मासूक ।
ए कौल सुन रूह मोमिन, हाए हाए हुए नहीं टूक-टूक ।।१५।।

जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल ।
सो क्यों तुमें याद न आवहीं, अर्स में तन तुम असल ।।१६।।

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के ।
हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए ।।१७।।

लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से ।
आई अर्स रूहें गिरो अहमदी, किए जाहेर जबराईलें ।।१८।।

१. कायम, अखंड । २. सम्बन्ध । ३. राई का दाना । ४. हुकम ।

करसी बका अर्स जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद ।
आखिर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद ॥१९॥

हक बका का किबला[1], कह्या जाहेर होसी आखिरत ।
पावें न माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत ॥२०॥

हकें बुजरकी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर ।
सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूह की नजर ॥२१॥

कहे कुरान इन जिमी से, तरफ न पाई अर्स हक ।
ए तेहेकीक किन ना किया, कई ढूंढ थके बुजरक ॥२२॥

जो बची गिरोह कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर ।
बेर तीसरी लैलत कदर में, जिन रोज कयामत करी फजर ॥२३॥

सोई गिरो इसलाम की, खेल लैल देख्या दो बेर ।
तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर ॥२४॥

सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम ।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम ॥२५॥

ए जो पैदा जुलमत से, सो कुंन केहेते उपजे ।
मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के ॥२६॥

कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत[2] के ।
कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे ॥२७॥

लैलत कदर में रूहें फरिस्ते, जो अर्स से उतरे ।
कौल किया हकें जिन सों, सो नूर बानी से समझेंगे ॥२८॥

फना जिमी के बीच में, जाहेरी पहाड़ पूजत ।
दुनियां नजर फना मिने, अर्स बका न काहूं सूझत ॥२९॥

दिल हकीकी अर्स मोमिन, कह्या तिन दिल की भी तरफ नांहें ।
वाकी इत तरफ क्यों पाइए, दिल रेहेत अर्स तन माहें ॥३०॥

१. पूज्य स्थान । २. शून्य - निराकार से उत्पन्न जीव ।

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद[1] सूरत ।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत ॥३१॥

ए जो फजर सूर असराफील, नुकता[2] हुकम बजावत ।
ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत ॥३२॥

और कुफर दुनी जो पहाड़ सी, सूर दूजे कायम करत ।
हकें मेहेर कर मोमिनों पर, बातून माएने लिखत ॥३३॥

फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन ।
दई लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन ॥३४॥

दिल मोमिन अर्स कह्या, ए जो असल अर्स में तन ।
ए लिख्या फुरमान में जाहेर, पर किया न बेवरा किन ॥३५॥

औलिया लिल्ला रूहें मोमिन, बोहोत नाम धरे उमत ।
ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अर्स रूहें हक निसबत ॥३६॥

हकें कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनों पर ।
सो फिरका खोले इसारतें रमूजें , बिन मोमिन न कोई कादर ॥३७॥

हकें लिख्या मैं करूँ हिदायत, एक नाजी फिरके को ।
हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजख मों ॥३८॥

लिखियां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम ।
सो सब आमर[3] दई हाथ रूहन, इनों दिल अर्स कर बैठे खसम ॥३९॥

और दिल हकीकी अर्स मोमिन, हके दिल अर्स कह्या इन ।
दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कह्या दुस्मन ॥४०॥

दुनियां दिल मजाजी अवलीस, दिल हकीकी पर हक ।
एक गिरो दिल अर्स कही, सोई अर्स रूहें बुजरक ॥४१॥

रूह की नजरों पाइए, जो हक के नजीकी ।
सो बैठे अपने मरातबे[4], देवे हक कलाम साहेदी ॥४२॥

१. किशोर । २. रहस्य । ३. हुकम । ४. पद, दर्जे ।

बड़ा फरिस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित ।
सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत ॥४३॥

मलकूत[१] जबरूत[२] लाहूत[३], ए अर्स कर तीनों लिखे ।
मलकूत फना बीच में, जबरूत लाहूत बका ए ॥४४॥

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित ।
अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत ॥४५॥

आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाकी हद जबरूत ।
पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत ॥४६॥

हक हादी रूहें रूहअल्ला, ए बीच अर्स वाहेदत ।
करे इलम लदुन्नी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत ॥४७॥

वाहेदत निसबत अर्स की, जब जाहेर हुई खिलवत ।
ए सुकन सुन मोमिन, दिल लेसी अर्स लज्जत ॥४८॥

ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत ।
वाहेदत एही केहेलावहीं, बीच अर्स अजीम उमत ॥४९॥

बीच मेयराज इसारतें, मासूक लिख भेजत ।
हाँसी करने रूहन पर, ए जो फरेब[४] देखाया इत ॥५०॥

हक अर्स नजीक सेहेरग[५] से, दोऊ हादी खोले द्वार ।
बैठाए अर्स अजीम में, जो कह्या मेयराजें नूर पार ॥५१॥

किन तरफ न पाई अर्स हक की, मांहें चौदे तबक ।
सो खोल दिए पट हादिएँ, इलम ईसे के बेसक ॥५२॥

देखो मरातबा मोमिनों, बोलें न मेयराज बिन ।
जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अर्स रूहन ॥५३॥

मेयराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमिन ।
कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर[६] या बिन ॥५४॥

१. वैकुंठ । २. अक्षरधाम । ३. परमधाम । ४. मायावी खेल । ५. प्राण नली । ६. सामर्थ्यवान ।

कई जोर किया जबराईलें, आया एक कदम महंमद खातिर ।
तो भी आगूँ आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर ॥५५॥

चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमिन ।
जो रूहें उतरी लैलत कदर में, सो चढ़ जाएंगे अर्स वतन ॥५६॥

इसारतें मेयराज में, जो लिख भेजियां हक ।
सो खोलें हम इसारतें, पढ़ायल रूह अल्ला के बेसक ॥५७॥

कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर ।
तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर ॥५८॥

अन्दर मुरग जो कहया, बैठा हुकम के दरखत ।
इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमिन खोले मारफत ॥५९॥

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर ।
पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर ॥६०॥

हादीएँ पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में ।
खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे ॥६१॥

लिख्या दरिया[1] नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी ।
मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदें मेयराज में साहेदी ॥६२॥

ए जो मुरग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था ।
जो छोडूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा ॥६३॥

दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री ।
ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी ॥६४॥

कह्या खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर ।
दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर ॥६५॥

हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा[2] क्यों ए ना होए ।
करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए ॥६६॥

१. मोह सागर । २. विलीन होना ।

नूर तजल्ला बीच में, हक हादी रूहों खिलवत ।
हक से हादी रूहें नूर में, ए अर्स असल वाहेदत ॥६७॥

नूर तजल्ला बीच में, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन ।
जित आए न सक्या जबराईल, इत असल मोमिनों तन ॥६८॥

लिया हाथ हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हाँसी करत ।
हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हाँसी इन खिलवत ॥६९॥

मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फुरमान ।
इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान ॥७०॥

सो कुलफ कह्या फरामोस[1] का, कह्या गुनाह रूहों का दिल ।
खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल ॥७१॥

फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल ।
याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल ॥७२॥

कहे महंमद सुनो मोमिनों, ए उमी[2] मेरे यार ।
छोड़ दुनी ल्यो अर्स को, जो अपना वतन नूर पार ॥७३॥

हम बंदे रूहें इन दरगाह, कह्या अर्स दिल मोमिन ।
यारों बुलावें महंमद, करो सिजदा हजूर अर्स तन ॥७४॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥२६४॥

खुलासा इसलाम का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन ।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन ॥१॥

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन ।
ए खुलासा बिने[3] इसलाम का, सबों देखावे बका वतन ॥२॥

बका फना का बेवरा, पाया मगज सबका ए ।
हादी रूहें अर्स से इजने[4], लैलत कदर में उतरे ॥३॥

१. बेहोसी । २. बिन पढ़े । ३. नियम । ४. हुकम ।

हकें कह्या अलस्तो-बे-रब-कुंम, कालू बले कह्या रूहन।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन।।४।।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फरिस्ते।
मैं तुम में साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के।।५।।

चौथे आसमान लाहूत में, रूहें बैठी बारे हजार।
इन तसबी[1] से पैदा होत हैं, फरिस्तों का सिरदार।।६।।

रूहें रहें दरगाह बीच में, प्यारी परवरदिगार।
खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहें सुमार।।७।।

उमत मेला महंमद का, इनकी काहूँ ना पेहेचान।
ना होए खुले बातून बिना, मारफत हक फुरमान।।८।।

ए बात नहीं अटकल की, होए साबित खुलें हकीकत।
बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत।।९।।

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें।
सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए।।१०।।

मासूक महंमद तो कह्या, बहस[2] हुआ वास्ते इस्क।
और कलाम अल्ला में कह्या, आसिक नाम है हक।।११।।

मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें।
ए जाने हक हादी रूहें, अर्स बका के मांहें।।१२।।

सुंनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत।
महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत।।१३।।

सक सुभे सब सरीयतों, यों कहे हदीस फुरमान।
कोई जाने ना हक तरफ को, ए अर्स रूहें पेहेचान।।१४।।

दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए।
आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए।।१५।।

१. माला। २. वाद-विवाद।

जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूं औरन ।
ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन ॥१६॥

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन ।
रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन ॥१७॥

इनों तन असल अर्स में, तीन बेर उतरे मांहें लैल ।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, ए हकें देखाया खेल ॥१८॥

रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेंहेंदी देखावन ।
तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवे वतन ॥१९॥

रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त दई सबन ।
द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन ॥२०॥

रूहें उतरी नूर बिलंद से, खलक पैदा जुलमत ।
दुनी दिल अबलीस कह्या, दिल मोमिन हक वाहेदत ॥२१॥

दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल ।
हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल ॥२२॥

तीन जिनस पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन ।
करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन ॥२३॥

ए ले खुलासा मोमिन, बका राह इसलाम ।
ए मेहेर मुतलक[1] हक से, करत जाहेर अल्ला कलाम ॥२४॥

बिने[2] सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान ।
दीजे साहेदी मुसाफ की, ज्यों होए ना सके मुनकर[3] जहान ॥२५॥

जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल ।
हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल ॥२६॥

पांच बिने कही मुस्लिम की, जिन लई सरीयत ।
कलमा निमाज रोजा कह्या, और जगात हज जारत[4] ॥२७॥

१. बेशक । २. नियम, तरीके, रसम । ३. अस्वीकार करना । ४. दर्शन ।

जुबांन से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज ।
जगात[१] हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज इलाज ॥२८॥

परहेज करे बदफैल से, बिने पांचों से पाक होए ।
सो आग न जले दोजख की, पावे भिस्त तीसरी सोए ॥२९॥

कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान[२] लग आखिर ।
पर अर्स बका हक का, दिल होए न मोमिन बिगर ॥३०॥

जो पांच बिने न करे, सो नाहीं मुसलमान ।
इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें फुरमान ॥३१॥

एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबुवत[३] ।
एक दीन जब होएसी, कह्या तब होसी साबित ॥३२॥

हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात ।
सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना पुलसरात ॥३३॥

कहे महंमद मिस्कात में, दुनी दिल पर सैतान ।
वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान ॥३४॥

पर मैं डरों इमामों से, करसी गुमराह ऐसी उमत ।
करसी लड़ाई आप में, छूटे न लग कयामत ॥३५॥

तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक ।
और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक ॥३६॥

करी हकें हिदायत नाजी को, ए लिख्या मांहें फुरमान ।
इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान ॥३७॥

सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत ।
ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत ॥३८॥

छोड़ सरा[४] ले तरीकत[५], पीठ देवे नासूत[६] ।
फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत[७] ॥३९॥

१. जकात - दान । २. धर्म, नियम । ३. पेगम्बरी । ४. करम कांड । ५. उपासना कांड । ६. मृत्युलोक । ७. वैकुंठ ।

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिल सों रोजे रमजान ।
दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज करे रसूल मकान ॥४०॥

कह्या दिल दुनी का मजाजी, जो पैदा हुआ केहेते कुंन ।
सो छोड़ ना सके मलकूत को, आड़ी जुलमत हवा ला सुंन ॥४१॥

दुनियां दिल कह्या मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का ।
अबलीस कह्या दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह ॥४२॥

आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए ।
कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए ॥४३॥

जबराईल महंमद हिमायतें, तो भी छोड़ न सक्या असल ।
तो दुनियां जो तिलसम[1] की, सो क्यों सके आगे चल ॥४४॥

जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत ।
सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत ॥४५॥

जो उतरे मलायक लैल में, ताको असल नूर मकान ।
सो राह हकीकत लिए बिना, उत पोहोंचे नहीं निदान ॥४६॥

कलमा[2] निमाज[3] रोजा[4] हकीकी, करे दिल सों रूह पेहेचान ।
हुआ बंदा बूझ जगात में, दिल दीदार नूर सुभान ॥४७॥

मलकूत हवा जुलमत, उलंघ जाना तिन पर ।
बिना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर ॥४८॥

जिनों हक हकीकत देवहीं, सो छोड़े हवा मलकूत ।
दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत ॥४९॥

जो फरिस्ता जबरूत का, सो रेहे ना सके मलकूत ।
मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत ॥५०॥

बड़ा फरिस्ता नजीकी, जाको रूहल अमीन[5] नाम ।
जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम ॥५१॥

१. जादु, मायावी खेल । २. मंत्र जाप । ३. नमाज - नमन । ४. व्रत । ५. श्रेष्ठ, सत्यनिष्ठ ।

पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सबन ।
सो जबराईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमिन ॥५२॥

सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्यों ए कर ।
हिमायत लई महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर ॥५३॥

तन मोमिन असल अर्स में, जो अर्स अजीम बका हक ।
जित पोहोंच्या नहीं जबराईल, तित क्या कहूं औरों खलक ॥५४॥

हक हादी रूहें लाहूत में, ए महंमद रूहों वतन ।
इस्क हकीकत मारफत, तो हक अर्स दिल मोमिन ॥५५॥

मारफत हक हकीकत, अर्स रूहों को दई हक ।
जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक ॥५६॥

कही रूहें नूर बिलंद से, मांहें उतरी लैलत कदर ।
कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इनों खातिर ॥५७॥

ए राह इसलाम मोमिनों, चढ़ उतर देखाई रसूल ।
आई तीन सूरतें इन वास्ते, जाने रूहें जावें जिन भूल ॥५८॥

इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अर्स कुंजी हाथ दे ।
दे खिताब इमाम को, अर्स पट खोले इन वास्ते ॥५९॥

असराफील जबराईल, भेज दिया आमर[1] ।
निगहबानी[2] कीजियो, मेरे खासे बंदों पर ॥६०॥

इलम लदुन्नी भेजिया, सब करने बका पेहेचान ।
आप काजी हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान ॥६१॥

हक कहे मुख अपने, मैं रूहें राखी कबाए[3] तले ।
कोई और न बूझे इनको, मेरी वाहेदत के हैं ए ॥६२॥

मेरी कदीम[4] दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन ।
ए इलम लदुन्नी से माएने, करे हादी बीच रूहन ॥६३॥

१. हुकम । २. देख रेख करना । ३. शरण । ४. हमेशा से ।

अर्स दिल इनका कह्या, और कह्या हकीकी दिल ।
एती बड़ाई इनको दई, जो वाहेदत इनों असल ॥६४॥

ए अर्स बड़ा रूहों का, जो कह्या तजल्ला नूर ।
जबराईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर ॥६५॥

हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए ।
सो वास्ते रूहों दाखले[1], अब हादी देत मिलाए ॥६६॥

कही पाँच बिने[2] मुस्लिम की, सोई पाँच बिने मोमिन ।
वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन ॥६७॥

अर्स रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इस्क ।
हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान[3] मेहेर हक ॥६८॥

चौदे तबक की जहान में, किन तरफ न पाई अर्स हक ।
सो किया अर्स दिल मोमिनों, ए निसबत मेहेर मुतलक ॥६९॥

हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर ।
ए हमेसा वाहेदत में, तो सब मुख ए मजकूर ॥७०॥

मोमिन आए इत थें ख्वाब में, अर्स में इनों असल ।
हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत मांहें नकल ॥७१॥

जो मोमिन बिने पाँच अर्स में, सो होत बंदगी बातन ।
जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन ॥७२॥

दिल अर्स हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन ।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन ॥७३॥

महामत कहे ए मोमिनों, हकें मेहेर करी तुम पर ।
भुलाए तुमें हाँसीय को, वास्ते इस्क खातिर ॥७४॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥३३८॥

१. दृष्टांत, मिसाल । २. नियम । ३. ब्रह्म ज्ञान ।

भिस्त सिफायत का बेवरा

मोमिन आए अर्स अजीम से, हमारी हक सों निसबत ।
दिया इलम लदुन्नी हकने, आई हक बका न्यामत ।।१।।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहेना ताए ।
अर्स बका रूहें फरिस्ते, सब हद्दां देवें बताए ।।२।।

कहूँ नेक दुनी का बेवरा, जो हकें दई पेहेचान ।
रूह अल्ला महंमद मेहेर थें, कहूँ ले माएने फुरमान ।।३।।

ए जो हुई पैदा कुंन से, सबों सिर फरज सरीयत ।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीकत ।।४।।

जो लग्या वजूद को, ताए छूटे न जिमी नासूत ।
पुलसरात[१] को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत ।।५।।

ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन ।
सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन ।।६।।

जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन ।
सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत बिन ।।७।।

जो होवे अर्स अजीम की, सो ले हकीकत मारफत ।
इनको इस्क मुतलक, जिन रूह हक निसबत ।।८।।

रूहें फरिस्ते दो गिरो, तिन दोऊ के दो मकान ।
एक इस्क दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान ।।९।।

उतरी रूहें फरिस्ते लैल में, अपने रब के इजन[२] ।
दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन ।।१०।।

भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखिर ।
ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर कर ।।११।।

१. करम कांड का रास्ता । २. हुकम ।

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त ।
दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित ॥१२॥

आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार ।
जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार ॥१३॥

भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई ।
भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही ॥१४॥

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम ।
चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम ॥१५॥

जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत ।
भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत ॥१६॥

जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले ।
सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए ॥१७॥

रूहों अक्स[1] कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन ।
सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन ॥१८॥

जोलों अपनी राह पावें नहीं, तोलों पोहोंचे ना अपने मकान ।
हादी हद्दों हिदायत करके, आखिर पोहोंचावें निदान ॥१९॥

अब कहूँ सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे ।
नेक सुनो सो बेवरा, देऊँ रूहों को बताए ॥२०॥

जित पोहोंची सिफायत[2] महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे ।
सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे ॥२१॥

जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत ।
सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत ॥२२॥

जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें ।
महंमद सिफायत लई मोमिनों, जाकी रूह बका अर्स माहें ॥२३॥

१. प्रतिबिम्ब । २. सिफारिश ।

अर्स ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर ।
हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर ॥२४॥

दुनी अपनी दानाई से, लेने चाहे दोए ।
फरेब देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोए ॥२५॥

सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत ।
छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत ॥२६॥

चौदे तबक नबी के नूर से, सो सब कहें हम मोमिन ।
सो मोमिन जाको सक नहीं, हक बका अर्स रोसन ॥२७॥

सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम ।
ले हकीकत पोहोंचे अर्स में, जिन सिर लिया महंमद हुकम ॥२८॥

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक[१] ।
कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक ॥२९॥

हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक ।
जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे[२] लीक[३] ले लीक ॥३०॥

तरक[४] करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन ।
वजूद को भी मह[५] करे, ए महंमद सिफायत मोमिन ॥३१॥

कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई ।
धरे आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी[६] में रोसनाई ॥३२॥

महंमद एही सिफायत, अर्स बका हक रोसन ।
जो अर्स अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रूह मोमिन ॥३३॥

जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात ।
देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात ॥३४॥

किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते ।
जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए ॥३५॥

१. बेशक । २. लडना झगडना । ३. पुराने रुढिवादी ज्ञान को पकड़े रहना । ४. त्यागना । ५. बलिदान करना । ६. मस्तक - माथा ।

इलम खुदाई लदुन्नी, सब अर्सों की सुध तिन ।
एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन ॥३६॥

अर्स रूहें सब बिध जानहीं, हौज जोए[1] जिमी जानवर ।
महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर ॥३७॥

जोए निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली ।
अर्स आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली ॥३८॥

क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए ।
किन विध टापू बीच में, ए सब सुध मोमिन देवें बताए ॥३९॥

जोए अर्स के किस तरफ है, किस तरफ हौज अर्स के ।
नूर अर्स की गलियां, अरस अरवा जानें ए ॥४०॥

बारीक गलियां अर्स की, मोमिन भूलें न इत ।
अरवा अर्स की रात दिन, याही में खेलत ॥४१॥

जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान ।
जोए हौज अर्स जिमीय की, एक जरा न बिना पेहेचान ॥४२॥

नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर ।
महंमद सिफायत जिनको, तिन से छिपी रहे क्यों कर ॥४३॥

महंमद हक के नूर से, रूहें अंग महंमद नूर ।
सो देखो अर्स अरवाहों में, पोहोंच्या महंमद[2] का जहूर ॥४४॥

हक हादी रूहन सों, इत खेलें माहें मोहोलन ।
ए रहे हमेसा अर्स में, हौज जोए बागन ॥४५॥

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात ।
तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात ॥४६॥

एक बाल न खिरे पसुअन का, न गिरे पंखी का पर ।
कोई मोहोल न कबूं पुराना, दिन दिन खूबतर ॥४७॥

१. जमुना जी । २. स्यामाजी ।

इत नया न पुराना, न कम ज्यादा होए।
इत वाहेदत में दूसरा, कबहूं न कहिए कोए ।।४८।।

महामत सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।
हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार ।।४९।।

।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।३८७।।

इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूं फुरमान का, और हदीसे महंमद।
मोमिन होसी सो चीन्हसी, असल अर्स सब्द ।।१।।

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन।
तिनको सारों ढूंढ़िया, सो एक न पाया किन ।।२।।

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर ।।३।।

सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक।
सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक ।।४।।

सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत।
ढूंढ़ ढूंढ़ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित ।।५।।

ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर।
ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और ।।६।।

नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन।
लिखी कयामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन ।।७।।

आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब[1]।
किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब ।।८।।

यों गोते खाए बीच फना[2] के, ला[3] सुन्य ना उलंघी किन।
ढूंढ़ ढूंढ़ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन ।।९।।

१. साधनाएं करना। २. नश्वर ब्रह्मांड। ३. शून्य निराकार।

लदुन्नी से पाइए, जो है इलम खुदाए ।
खोज खोज सबे हारे, आज लों इप्तदाए[1] ॥१०॥

लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर ।
एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद[2] जहूर ॥११॥

लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक[3] ।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक ॥१२॥

एक खुदा हक महंमद, अर्स बका हौज जोए ।
उतरी अरवाहें अर्स की, चीन्हो गिरो नाजी सोए ॥१३॥

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए ।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के ॥१४॥

कहे फुरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर ।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर ॥१५॥

फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर ।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर ॥१६॥

महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम ।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम ॥१७॥

जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखिर ।
और होसी दोजखी, जो जुदे रहे बहत्तर ॥१८॥

दुनियां चौदे तबक में, सोई नाजी गिरो है एक ।
आखिर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक ॥१९॥

महामत कहे ए मोमिनों, ल्यो हकीकत कुरान ।
ढूंढ़ो फिरके नाजी[4] को, जो है साहेब ईमान ॥२०॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥४०७॥

१. आदि से । २. अद्वैतवाद । ३. सच्चा । ४. ईमानदार (गर्व करने योग्य) ब्रह्मात्माओं का समूह ।

हक की सूरत

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत ।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत ।।१।।
आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर ।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर ।।२।।
खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक ।
खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक ।।३।।
दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार ।
तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार ।।४।।
पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत ।
बोहोत करी रद-बदलें[१], वास्ते सब उमत ।।५।।
अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर ।
और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर ।।६।।
बोहोत देखी बका न्यामतें[२], करी हक सों बड़ी मजकूर ।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर ।।७।।
कौल[३] किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत ।
हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत ।।८।।
वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान ।
सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान ।।९।।
जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक ।
जो इन बातों मुनकर, ताए होसी आखिर दोजक ।।१०।।
खुदा काजी होए बैठसी, होसी फजर को दीदार ।
ले पुरसिस[४] लैलत कदर में, होसी फजर तीसरे तकरार ।।११।।

१. वार्तालाप । २. बहुमूल्य या अलभ्य पदार्थ । ३. वायदा । ४. पूछ-ताछ ।

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक ।
तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजक ॥१२॥
जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे ।
ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से ॥१३॥
कहें पैगंमर हम सरमिंदे, हक सों होए न बात ।
तुम जाओ महंमद पे, वे करसी सबों सिफात[1] ॥१४॥
ए बात पसरी दुनी में, जो कोई ल्याया आकीन ।
सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन ॥१५॥
खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनियां महंमद के नूर ।
इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर ॥१६॥
कोईक पूरा ईमान ल्याइया, बिन ईमान रहे बोहोतक ।
कई जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक[2] ॥१७॥
केते कहावें मोमिन, और दिल में मुनकर[3] ।
एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर ॥१८॥
कह्या फिरके नाजीय को, होसी हक की हिदायत ।
सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखिरत ॥१९॥
तब होसी कुरान का माजजा, और नबी की नबुवत ।
ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेंहेदी करसी साबित ॥२०॥
कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद[4] हक ।
तिनको न कहिए मोमिन, जो इनमें ल्यावे सक ॥२१॥
जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावे सक ।
तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक ॥२२॥
हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार ।
जो जहूदों ने पकड़्या, इनों सोई किया करार ॥२३॥

१. सिफारीश । २. दो दिली, कपटी । ३. नास्तिक । ४. साक्षी - गवाह ।

जो कहे खूदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद ।
खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद ॥२४॥

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान ।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान ॥२५॥

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर दीन माने क्यों कर ।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर ॥२६॥

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान ।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक[1] महंमद जान ॥२७॥

महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर ।
हक अमरद[2] सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर ॥२८॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥४३५॥

रूहों की बिने देखियो

जो उमत होवे अर्स की, सो नीके विचारो दिल ।
बिने अपनी देख के, करो फैल देख मिसल[3] ॥१॥

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन ।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन ॥२॥

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर ।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर ॥३॥

कैसी बात दिल पैदा करी, जिनसे मांग्या खेल ए ।
सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे ॥४॥

दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक ।
तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक ॥५॥

खोज खोज के सब थके, कई कहावें फिरके बुजरक ।
पर तिन सारों ने यों कह्या, गई न हमारी सक ॥६॥

१. सांचा । २. किसोर स्वरूप । ३. आदर्श ।

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत ।
सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित ।।७।।

हम रूहें भी आइयाँ इन खेल में, सो गैयां माहें भूल ।
सुध ना बिरानी आपनी, भया ऐसा हमारा सूल ।।८।।

इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप ।
फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप ।।९।।

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत ।
ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत ।।१०।।

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, जासों पावें सब फल ।
ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने न कोई कल ।।११।।

सो कुंजी[1] साहेब ने, मेरे हाथ दई ।
जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही ।।१२।।

सक परदा कोई न रह्या, सब विध दई समझाए ।
कहे खोल दे अर्स रूहों को, ए मिलसी तुझे आए ।।१३।।

अब देखो दिल विचार के, कैसी बुजरक बात है तुम ।
कैसा खेल तुम देखिया, कई विध देखाई हुकम ।।१४।।

चीन्हो इन खसम को, चीन्हो बका वतन ।
और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल[2] करत विध किन ।।१५।।

फुरमान भेज्या किन ने, ल्याए ऊपर किन ।
कौन लेके आइया, मांहें क्या खजाना धन ।।१६।।

कौन ल्याया कुंजीय को, है कुंजी में क्या विचार ।
किन ने ताला खोलिया, खोल्या कौन सा द्वार ।।१७।।

क्या है इन दरबार में, दई कहां की सुध ।
सुध बका सारी नीके लेओ, विचारो आतम बुध ।।१८।।

१. तारतम रूपी चाबी । २. कार्य, करम ।

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजी किन ।
कुंजी कुलफ[1] गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन ।।१९।।

एह विचार किए बिना, जो करत हैं फैल हाल ।
जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल ।।२०।।

फरामोसी तुमें किन दई, अब तुमको कौन जगाए ।
इन बातों नींद क्यों रहें, जो होवे अर्स अरवाए ।।२१।।

मोमिन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत[2] ।
ए चोट काफरों न लगे, मोमिनों छेद निकसत ।।२२।।

महामत कहे ए मोमिनों, क्यों न विचारो तुम ।
कई बिध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम ।।२३।।

।।प्रकरण।।८।।चौपाई।।४५८।।

नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत जान के, देखो मेहेर हक की ए ।
हाए हाए तो भी इस्क न आवत, अरवा अर्स की जे ।।१।।

ए मेहेर भई मोमिनों पर, समझत नाहीं कोए ।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए ।।२।।

खावंद अर्स अजीम का, सो कहूं नेक हकीकत ।
इन हक बका से मोमिन, रखते हैं निसबत ।।३।।

बका अव्वल से अबलो, किन किया न जाहेर सुभान ।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान ।।४।।

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास ।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल[3] के पास ।।५।।

ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए ।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के ।।६।।

१. ताला । २. फर्क । ३. अक्षरब्रह्म ।

इनमें कोई कायम[1] करें, जो दिल आए चढ़त ।
सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत ।।७।।

कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द माहें ।
तो रोसनी नूरमकान[2] की, क्यों आवे इन जुबांए ।।८।।

जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल ।
तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल ।।९।।

ए बल नूर-जलाल[3] को, जिन की एह कुदरत ।
एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत ।।१०।।

सो नूर[4] नूरजमाल[5] के, दायम[6] आवें दीदार ।
ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार ।।११।।

नूर-जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत ।
तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित ।।१२।।

जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल ।
तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल ।।१३।।

जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत ।
नूरतजल्ला की तजल्ली[7], ए जोत सेहे न सकत ।।१४।।

जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत ।
तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत ।।१५।।

ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक ।
नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक ।।१६।।

ए जो सब कहियत है, हक बिना कछु ए बात ।
सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात ।।१७।।

पाइए इनसे बुजरकी, जो असल कह्या एक ।
खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक ।।१८।।

१. अखंड । २. अक्षरधाम । ३. अक्षरब्रह्म । ४. अक्षरब्रह्म । ५. अक्षरातीत पूर्णब्रह्म । ६. हमेशा । ७. आभा, प्रकास, नूरे हक ।

आसिक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह ।
खूबी सोभा सब इनकी, प्यारा प्रेम सनेह ॥१९॥

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन ।
हक बंदगी सिवाए जो कछू कह्या, सो सब तले इजन[1] ॥२०॥

अब कहूं इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम ।
तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम ॥२१॥

इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर ।
फिराक[2] न आवत हमको, याद कर ऐसा घर ॥२२॥

आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन ।
अजहूँ न विरहा आवत, सुन के एह वचन ॥२३॥

ऐसा कदीमी[3] वतन, ऐसा इस्क आराम ।
ऐसी मेहेरबानगी गिरो को, सुख देत हैं आठों जाम ॥२४॥

ऐसा हक जो कादर[4], सब विध काम पूरन ।
ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमिन ॥२५॥

ए जो सुकन हक के मैं कहे, तामें जरा न रही सक ।
ए सुन के विरहा न आवत, सो ना इन घर माफक ॥२६॥

यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पिउ ।
करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ ॥२७॥

फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत ।
जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत ॥२८॥

खूबी खुसाली बुजरकी, सोभा सिफत मेहेरबान ।
इस्क प्रेम वतन का, कायम सुख सुभान ॥२९॥

कहूँ प्यार कर मोमिनों, दिल दे सुनियो तुम ।
अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम ॥३०॥

१. हुकम । २. जुदाई, वियोग । ३. प्राचीन, अखंड । ४. सामर्थ्य ।

कुदरत से पाइयत हैं, बुजरकी कादर ।
सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूँ नजर ॥३१॥

तिन हकें मोमिन दिल को, अपना कह्या अर्स ।
कह्या तुम भी उतरे अर्स से, यों दई सोभा अरस-परस ॥३२॥

ए खावंद काहूँ न पाइया, खोज खोज थके सब मिल ।
चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम[1] अकल ॥३३॥

सो हादी देखावत जाहेर, अर्स खुदा का जे ।
चौदे तबक चारों तरफों, सेहेरग से नजीक ए ॥३४॥

हाँसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक ।
चौदे तबकों में नहीं, सो देखाए दिया नजीक ॥३५॥

महामत कहे हँसे हक, देख मोमिनों हाल ।
आखिर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल ॥३६॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥४९४॥

जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए ।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए ॥१॥

अव्वल बीच और अबलों, सबों ढूंढ़्या बनी आदम ।
एती सुध किन न परी, कहाँ खुदा कौन हम ॥२॥

कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम ।
सुध न खसम रसूल की, नहीं गिरो की गम ॥३॥

कौन रूहें कौन फरिस्ते, कौन आदम कौन जिन[2] ।
पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन ॥४॥

अपनी अपनी खोजिया, पर आया नहीं खुदाए ।
थके सब नासूत में, पोहोंचे नहीं इप्तदाए ॥५॥

१. झूठा । २. भूत - प्रेत, राक्षस ।

आब हैयाती न पाइया, दौड़या सिकंदर ।
काहूँ न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर ।।६।।

आप राह अपनी मिने, ढूंढ़्या सब फिरकन ।
कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन ।।७।।

कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल ।
छोड़ सुरिया[1] सितारा, कोई आगूं न सके चल ।।८।।

जाहेर लिया माएना, सरीयत कांड करम ।
खुद खबर पाई नहीं, ताथें पड़े सब भरम ।।९।।

लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान ।
और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान ।।१०।।

माएनें ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार ।
फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार ।।११।।

कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम ।
सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम ।।१२।।

क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर ।
कहे सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर ।।१३।।

क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर ।
ए सुध किनको न परी, कौन किताबें क्यों कर ।।१४।।

मनसूख[2] करी सब किताबें, रानी[3] सबों की उमत ।
ए सुध किन को न परी, जो इनकी क्यों करी सिफत ।।१५।।

कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखिर ।
कहां से उतरे रूहें मोमिन, कहां से आए काफर ।।१६।।

काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार ।
क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर कयामत मुद्दार ।।१७।।

१. ज्योतिस्वरूप । २. रद् । ३. रद्, नष्ट ।

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर ।
क्यों कर पहाड़ उड़सी, तब कौन नजीक कौन दूर ॥१८॥

पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर ।
सब दुनियां को खाएसी, आजूज[१] माजूज[२] क्यों कर ॥१९॥

कह्या गधा बड़ा दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान ।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान[३] ॥२०॥

ना पेहेचान दज्जाल की, ना दाभतूलअर्ज ।
ए सुध काहूं न परी, क्यों मगरब[४] सूरज ॥२१॥

ना सुध मोमिन गिनती, ना सुध तीन उमत ।
माएने मगज खोले बिना, पाइए ना तफावत ॥२२॥

मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक ।
पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं की सक ॥२३॥

जब मोहे हादी सुध दई, ए खुले माएने तब ।
तले ला मकान के, खुराक मौत की सब ॥२४॥

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून[५] बेचगून[६] ।
खुदा याही को बूझहीं, बेसबी[७] बेनिमून[८] ॥२५॥

याही को माया कहें, पैदास सब इन से ।
कोई कहे ए करम है, सब बंधे इन ने ॥२६॥

खुदा याही को कहें, याही को कहें काल ।
आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल ॥२७॥

यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन ।
यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन ॥२८॥

दुनियां ला[९] इलाह[१०] की, फेर फेर करे फिकर ।
गोते खाए फना मिने, पोहोंचे न बका नजर ॥२९॥

१. दिन । २. रात । ३. कमर । ४. पश्चिम । ५. निराकार । ६. निर्गुण । ७. अनुपम । ८. अद्वितीय । ९. क्षर । १०. अक्षर ।

ला याही को केहेवहीं, इला भी याही को ।
सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मों ॥३०॥

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर ।
सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर ॥३१॥

मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात ।
जो मेहेर मुझ पर भई, सो कहूं भाइयों को बात ॥३२॥

जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इला तब ।
नूर-मकान नूर-तजल्ला, पाई अर्स हकीकत सब ॥३३॥

जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान ।
मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरो अपनी जान ॥३४॥

नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब ।
तोबा[1] दरवाजे बन्द होएसी, कहा करसी ईमान तब ॥३५॥

ईमान ल्याओ सो ल्याइओ, मैं केहेती हों बीतक ।
पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कह्या मोहे हक ॥३६॥

रूह अल्ला अर्स अजीम से, मो सों आए कियो मिलाप ।
कहे तुम आए अर्स से, मोहे भेजी बुलावन आप ॥३७॥

तुम आए खेल देखन को, सो किया कारन तुम ।
ए खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम ॥३८॥

तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब ।
हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब ॥३९॥

इलम लदुन्नी देय के, खोल दई हकीकत ।
सदर-तुल-मुंतहा[2] अर्स-अजीम[3], कही कायम की मारफत ॥४०॥

दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार ।
ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार ॥४१॥

१. प्रायश्चित । २. अक्षरधाम । ३. परमधाम ।

साहेदी खुदाए की,

दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे ।
चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे ॥४२॥
सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब ।
कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब[१] ॥४३॥
इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया ।
तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कह्या ॥४४॥
नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाए दिया ।
सेहेरग से नजीक, अर्स बका में लिया ॥४५॥
साहेदी खुदाए की, रूह अल्ला दई जब ।
खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब ॥४६॥
अन्दर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार ।
ल्याए किल्ली अर्स अजीम से, ले बैठाए नूर के पार ॥४७॥
हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन ।
रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन ॥४८॥
ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी[२] देत ।
बैठ बीच ब्रह्मांड के, अर्स बका में लेत ॥४९॥
अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए ।
कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए ॥५०॥
जो रूहें अर्स अजीम की, कहूं तिनको मेरी बीतक ।
जो हुई इनायत[३] मुझ पर, जिन बिध पाया हक ॥५१॥
कायम फना बीच दुनी के, हुती न तफावत[४] ।
मैं जो बेवरा करत हों, सो कदम हादी बरकत ॥५२॥
नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध ।
जबरूत लाहूत हाहूत[५], दई हादी हिरदे बुध ॥५३॥

१. यातना, सजा । २. गवाही । ३. कृपा । ४. अंतर । ५. रंगमहोल (मूल मिलावा) ।

ए सुध पाए पीछे, हुआ बेवरा बुजरक ।
ज्यों जाहेर मांहें दुनियां, त्यों बातून माहें हक ॥५४॥

बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी ।
नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती ॥५५॥

नासूत बीच फना के, अर्स कायम हमेसगी ।
दुनियां ताल्लुक दिल की, रूह मोमिन खुदाए की ॥५६॥

एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने ।
नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़ें न हठ अपने ॥५७॥

इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर ।
फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर ॥५८॥

जाहेर मैं केता कहूं, खुदाए का जहूर ।
वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर ॥५९॥

ऊपर ला मकान के, राह न मौत की तित ।
नूर-मकान नूर-तजल्ला, अर्स हमेसगी जित ॥६०॥

नूर-तजल्ला अर्स में, सूरत साहेब की ।
दरगाह बीच रेहेत हैं, रूहें हमेसगी ॥६१॥

बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान ।
रहें हजूर हक के, ए निसबत[1] करी पेहेचान ॥६२॥

तब मैं दिल में यों लिया, करों कायम चौदे तबक ।
मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक ॥६३॥

ऐसा जब दिल में आइया, दिया जोस हकें बल ।
उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल ॥६४॥

ए इनायत पेहेले भई, आए महंमद आप ।
रूह अल्ला पेहेले दिल मिने, अहमद[2] कियो मिलाप ॥६५॥

१. संबन्ध । २. धनी के हुकम जोश का सरूप ।

तब खुदाई इलम से, भई सबे पेहेचान ।
ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान ॥६६॥

सो कुरान मैं देखिया, सब पाइयां इसारत ।
हाथ मुद्दा सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत ॥६७॥

जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत ।
ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों आवे असल लज्जत ॥६८॥

एह कायम न्यामतें[1], दोऊ से जुदी जुदी ।
नूर-जमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी ॥६९॥

महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई ।
कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई ॥७०॥

ए कलाम अल्ला में पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक ।
बरकत खास उमत की, सब लेसी इस्क ॥७१॥

करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम ।
साफ दिल सब होएसी, जिनको पोहोंच्या दम ॥७२॥

कहे सब्द सब आगूं ही, इत खुदा करसी कजाए ।
हिसाब सबन का लेयके, भिस्त जो देसी ताए ॥७३॥

रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, मेंहेदी इमामत[2] ।
दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत ॥७४॥

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर ।
आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर ॥७५॥

एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम ।
लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम ॥७६॥

जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाए ।
इत काम बीच खुदाए के, काहूँ दम ना मार्‌यो जाए ॥७७॥

१. खजाना । २. नेतृत्व ।

हुकम साहेब का इन विध, सो लेत सबे मिलाए ।
खावंदे बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाए ॥७८॥

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर ।
हुकम ऐसा कर छोड़्या, काहूं करनी न पड़े फिकर ॥७९॥

महामत कहे सुनो मोमिनों, मौला[१] अति बुजरक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक ॥८०॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥५७४॥

दोनामा[२] किताब-मंगला चरण

अब कहूं विध निगम[३], देऊँ महंमद की गम ।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम ॥१॥

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन होए सब एक ।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख ॥२॥

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब ।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद ॥३॥

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ ॥४॥

हक नाहीं मिने सृष्ट सुपन, ढूंढ़्या ला के लोकन ।
जो जुलमत[४] से उतपन, दई साख आप मुख तिन ॥५॥

कई खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम ।
ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम ॥६॥

कैयों ढूंढ़्या चौदे भवन, ढूंढ़े चार मुक्त के जन ।
नवधा[५] के ढूंढ़े भिंन भिंन, न कछु खबर त्रैगुन ॥७॥

महाप्रले होसी जब, सरगुन न निरगुन तब ।
निराकार न सुंन, केहेवे को नाहीं वचन ॥८॥

१. मालिक । २. वेद कतेब । ३. वेद । ४. अज्ञान (शून्य का अज्ञानांधकार) । ५. नव प्रकार की भक्ति ।

नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया ।
जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया ।।९।।

ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार ।
ढूंढ़्या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार ।।१०।।

कई अवतार किताबाँ कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थंकर ।
औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं काहूं खबर ।।११।।

कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन ।
भी कह्या निरंजन, तार्थें अगम रह्या सबन ।।१२।।

कैयों ढूंढ़्या होए दरवेस[1], फिरे जो देस विदेस ।
पर पाया ना काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस[2] ।।१३।।

मंगला चरन तमाम

।।प्रकरण।।११।।चौपाई।।५८७।।

साखी-दौड़ करी सिकंदरे, ढूंढ़्या हैयाती आब[3] ।
बका अर्स पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब ।।१।।

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन ।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुंन ।।२।।

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून ।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ।।३।।

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत ।
देखाए खोल माएने, अर्स हक सूरत ।।४।।

मैं आया हक का हुकम, हक आएगा आखिरत ।
कौल किया हकें मुझ सों, मैं ल्याया हक मारफत ।।५।।

उतरी अरवाहें अर्स से, रूहें बारे हजार ।
और उतरी गिरो फरिस्ते, और कुंन से हुआ संसार ।।६।।

१. संत, फकीर । २. नाश । ३. अमृतजल ।

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान ।
जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे हक पेहेचान ।।७।।

सात तबक तले जिमी के, तिन पर है नासूत ।
तिन पर हैं कई फरिस्ते, तिन पर है मलकूत ।।८।।

ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान ।
नूर पार नूर तजल्ला[१], मैं तहां से ल्याया फुरमान ।।९।।

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर ।
मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर ।।१०।।

कह्या सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार ।
कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार ।।११।।

बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए ।
बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए ।।१२।।

कौल किया हकें मुझ से, हम आवेंगे आखिर ।
ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर ।।१३।।

होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार ।
भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार ।।१४।।

ईसा मेंहेदी जबराईल, और असराफील इमाम ।
मार दज्जाल एक दीन करसी, खोलसी अल्लाकलाम[२] ।।१५।।

सो ए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान ।
महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान ।।१६।।

तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अबलीस दिलों जिन ।
कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुंन ।।१७।।

सोई कौल सरीयत ने, पकड़ लिया इनों से ।
कौल तोड़त रसूल के, दुस्मन बैठा दिल में ।।१८।।

१. परमधाम । २. ब्रह्मज्ञान ।

आखिर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन ।
ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन ॥१९॥

जो कछू कह्या महंमदे, ईसे भी कह्या सोए ।
ए माएने सो समझहीं, जो अरवा अर्स की होए ॥२०॥

सात लोक तले जिमी के, मृत लोक है तिन पर ।
इंद्र रूद्र ब्रह्मा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर ॥२१॥

निराकार बैकुण्ठ पर, तिन पर अछर ब्रह्म ।
अछरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम ॥२२॥

ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत ।
इलम एकै बिध का, दोऊ की एक सरत ॥२३॥

ईसे महंमद मेंहेदी का, इन तीनों का एक इलम ।
हक नहीं ब्रह्मांड में, ए हुआ पैदा जिनके हुकम ॥२४॥

दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिए ए ।
हक नजीक सेहेरग से, बीच बका बैठावे ले ॥२५॥

करम कांड और सरीयत, ए तब मानें महंमद ।
जब ईसा और इमाम, होवें दोऊ साहेद ॥२६॥

हिंदू न माने कौल महंमद, न सरीयत मुसलमान ।
यों जान चौथे आसमान से, आया ईसा देने ईमान ॥२७॥

और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत ।
दे साहेदी महंमद की, करे इमामत[1] ॥२८॥

ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक ।
दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक ॥२९॥

पेहेले लिख्या फुरमान[2] में, आवसी ईसा इमाम हजरत ।
मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत ॥३०॥

१. नेतृत्व । २. कुरान में ।

वेदों कह्या आवसी, बुध ईश्वरों का ईस ।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस ॥३१॥

बुध ब्रह्मसृष्टी वास्ते, आवसी कह्या वेद ।
ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद ॥३२॥

जो नेत नेत कह्या निगमे[१], सब लगे तिन सब्द ।
माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद ॥३३॥

पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़ ।
पाई न हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़ ॥३४॥

वेद कहे उत दुनी की, पोहोंचे न मन अकल ।
कहे कतेब छोड़ सुरिया को, आगे पोहोंचे न अर्स असल ॥३५॥

निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम ।
सो ए करूँ सब जाहेर, रूहअल्ला के इलम ॥३६॥

कहूँ ईसे के इलम की, जो है हकीकत ।
हक बका अर्स उमत, जाहेर करी मारफत ॥३७॥

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम ।
सबमें उमत और दुनियाँ, सोई खुदा सोई ब्रह्म ॥३८॥

लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक ।
वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक ॥३९॥

तीन सृष्ट कही वेद ने, उमत तीन कतेब ।
लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब ॥४०॥

दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक ।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक[२] ॥४१॥

जो कछू कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद ।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद ॥४२॥

१. वेद । २. समझ ।

बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन ।
चलन जुदा कर दिया, ताथें समझ न परी किन ॥४३॥

ताथें हुई बड़ी उरझन, सो सुरझाऊँ दोए ।
नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोए ॥४४॥

विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकाईल ।
जबराईल जोस धनीय का, रूद्र तामस अजराईल ॥४५॥

बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासे बाँधे करम ।
ए सरीयत है वेद की, जासों परे सब भरम ॥४६॥

वेदें नारद कह्यो मन विष्णु को, जाको सराप्यो[1] प्रजापत[2] ।
राह ब्रह्म की भान के, सबों विष्णु बतावत ॥४७॥

दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत ।
सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत ॥४८॥

अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत ।
बीच तौहीद[3] राह छुड़ाए के, दाएं बाएं बतावत ॥४९॥

सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह ।
एही दुस्मन दुनी का, जिन मारी सबों की राह ॥५०॥

मलकूत कह्या बैकुंठ को, मोहतत्त्व अंधेरी पाल ।
अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल ॥५१॥

ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम ।
ठौर अछर सदरतुलमुंतहा, अरसुल्अजीम सो धाम ॥५२॥

श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम ।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम ॥५३॥

बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम ।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम ॥५४॥

१. श्राप दिया । २. ब्रह्मा । ३. एकेश्वर ।

बाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख ।
अन्दर दोऊ के गफलत, लड़त वास्ते भाख ॥५५॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥६४२॥

कंसे काला-गृह[1] में, किए वसुदेव देवकी बन्ध ।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अन्ध ॥१॥

नूह काफर की बन्ध में, रहे साल चालीस ।
बेटे मारे कई दुख दिए, तो भी काफर न छोड़ी रीस[2] ॥२॥

कहे वेद बैकुंठ से, आए चतुरभुज दिया दीदार ।
वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया नन्द द्वार ॥३॥

मलकूत से फरिस्ता, नूर समझाया आए ।
नसीहत कर पीछा फिर्‌या, नूहें स्याम दिया पोहोंचाए ॥४॥

अहीरों की कोम में, जित महत्तर नन्द कल्यान ।
सुख लिया बृज वधुएं, औरों न हुई पेहेचान ॥५॥

महत्तरों[3] की कोम में, जित हूद[4] कील[5] सिरदार ।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार ॥६॥

खेल हुआ जो लैल में, तकरार जो अव्वल ।
उतरीं रूहें फरिस्ते, अरस के असल ॥७॥

सात रात आठ दिन का, सुकें कह्या इन्द्र कोप ।
भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृतलोक ॥८॥

तब गोवरधन तले, स्यामें राख्यो गोकुल ।
जल प्रले के फिरवले[6], अंदर न हुआ दखल ॥९॥

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद महत्तर ।
राखी रूहें कोहतूर[7] तले, डूब मुए काफर ॥१०॥

१. कारागृह, जेल । २. गुस्सा । ३. अहीर जाति । ४. नन्दजी । ५. कल्यानजी । ६. घेर लिया । ७. गोवरधन ।

हूद कह्या नंदजीय को, टापू बृज अखंड ।
कोहतूर गोवरधन कह्या, न्यारा जो ब्रह्मांड ॥११॥

जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लई बुलाए ।
सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए ॥१२॥

समारी किस्तीय को, तित मोमिन लिए चढ़ाए ।
सो स्याम चिराग[1] महंमद की, जिन मोमिन पार पोहोंचाए ॥१३॥

वेदें कह्या स्याम बृज में, आए नन्द के घर ।
पीछे आए रास में, इत हुई नहीं फजर ॥१४॥

कालमाया इंड पेहेले रच्यो, जोगमाया रचियो और ।
फेर तीसरो कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर ॥१५॥

पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर ।
तीसरा भया फजर का, जाने वाही लैलत कदर ॥१६॥

किस्ती नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए ।
स्याम बेटा नूह नबी का, फिर्या किस्ती पार पोहोंचाए ॥१७॥

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान ।
मोमिन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान ॥१८॥

कह्या वेदें कृष्ण अवतार की, पेहेले आए बृज के माहें ।
रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहाँए ॥१९॥

आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए लैल ।
दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥२०॥

कहे महंमद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार ।
लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियां सब दीदार ॥२१॥

लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत ।
सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन कयामत ॥२२॥

१. नूर, तेज ।

ब्रह्मसृष्टी सखियां स्याम संग, खेले बृज रास के मांहें ।
ए सुनियो तुम बेवरा, खेल फजर तीसरा इहांए ॥२३॥

ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार ।
सो ए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार[1] गुजार ॥२४॥

कालमाया जोगमाया, बीच कहे प्रले दोए ।
एह खेल भया तीसरा, माएने बुध जी बिना न होए ॥२५॥

एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान ।
प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान ॥२६॥

पेहेले भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर[2] ।
स्याम सरूप ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर ॥२७॥

दो बेटे नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम ।
स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम ॥२८॥

हलधर आतम नारायन, जो आया हिंदुस्तान ।
साहेब कह्या हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान ॥२९॥

बेटा नूह नबीय का, कह्या हिंद का बाप हिसाम ।
सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम ॥३०॥

स्याम रास से बरारब[3], ल्याया साहेब का फुरमान ।
हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान ॥३१॥

सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन ।
कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन ॥३२॥

बाप फारस[4] रूम आरब का, कह्या फुरमाने स्याम ।
फुरमान ल्याए वास्ते, रसूल धराया नाम ॥३३॥

वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुधजी ।
खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी ॥३४॥

१. लीला । २. बलराम । ३. आरबदेश । ४. ईरान ।

ए खिताब महंमद मेंहेदी पे, जाकी करे मुसाफ सिफत ।
सो महंमद मेंहेदी खोलसी, आखिर अपनी बीच उमत ॥३५॥

अवतार तले विष्णु के, विष्णु करे स्याम की सिफत ।
इन बिध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत ॥३६॥

लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम ।
ए मुकरर[1] सब महंमद पे, सो महंमद कह्या जो स्याम ॥३७॥

तीर्थंकरों सबों खोजिया, और खोज करी अवतार ।
तो बुजरकी इत कहाँ रही, जो कायम न खोले द्वार ॥३८॥

अवतारों इत क्या किया, जो दई न बका की सुध ।
तो लो द्वार मूंदे रहे, आए खोले विजया-अभिनंद-बुध ॥३९॥

सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला कलाम ।
उमत सबे रानी[2] गई, इनों किन को दिया पैगाम ॥४०॥

लिखी बड़ाई पैगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत[3] ।
अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत ॥४१॥

करी किताबें मनसूख[4], हुए जमाने रद ।
ना मोमिन पीछे तोफान के, जो लो आखिर आए महंमद ॥४२॥

रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास ।
ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टी प्रकास ॥४३॥

मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायन ।
रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान ॥४४॥

रात कही कदर की, बोहोत बड़ी है सोए ।
फिरत चिरागें[5] इनमें, चांद सूर ए दोए ॥४५॥

ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म ।
दे मुक्त सब दुनी को, ब्रह्मसृष्टी लेसी कदम ॥४६॥

१. निश्चित । २. रद् । ३. शिक्षा । ४. अप्रमाणिक । ५. दीपक ।

मोमिन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर ।
एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर ॥४७॥

ब्रह्मसृष्टी प्रेम लच्छ में, कुमारिका ईश्वर ।
तीसरी जीवसृष्ट दुनियां, वेद केहेत यों कर ॥४८॥

खास रूहें उमत की, और मुतकी[1] दीन इसलाम ।
और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम ॥४९॥

ब्रह्मसृष्टी अछरातीत से, ईस्वरी सृष्ट अछर से ।
जीवसृष्ट बैकुंठ की, ए जो गफलत में ॥५०॥

रूहें उमत कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती ।
और आम खलक तारीक[2] से, सो सब कुंन से मलकूती ॥५१॥

बुध नेहकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर ।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर ॥५२॥

विजिया-अभिनंद-बुध जी, लिखी एही सरत ।
ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त ॥५३॥

ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन ।
ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन ॥५४॥

चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, ढूंढ़ थके त्रैगुन ।
कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन ॥५५॥

करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत ।
देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत ॥५६॥

बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत बिध सब ।
बड़ाई ब्रह्मसृष्ट की, ए जो लीला होत है अब ॥५७॥

साल मास और दिन लिखे, कौल कयामत हकीकत ।
सिफत उमत मोमिनों, ए जो जाहेर होत आखिरत ॥५८॥

१. श्रद्धावान । २. शून्य, निराकार ।

विजिया-अभिनंद-बुधजी, और नेहेकलंक अवतार ।
कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार ॥५९॥

महंमद मेंहेदी आवसी, और ईसा हजरत ।
ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत ॥६०॥

अखण्ड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म ।
बुध विजिया-अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम ॥६१॥

भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक ।
काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक ॥६२॥

कई हुए ब्रह्मांड कई होएसी, पर ए लीला न हुई कब ।
विलास बड़ो ब्रह्मसृष्ट में, सुख नयो पसरसी अब ॥६३॥

कई दुनी हुई कई होएसी, पर कबूं न जाहेर उमत ।
दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज कयामत ॥६४॥

रसम करम कांड की, हुती एते दिन ।
अब इलम बुधजीयके, दई सबों प्रेम लछन ॥६५॥

सरीयत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन ।
महंमद मेंहेदी जाहेर होए के, इस्क दिया सबन ॥६६॥

पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्ट ।
याकी अस्तुत निगम करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट ॥६७॥

पेहेचान महंमद रूहअल्ला, और पेहेचान मोमिन ।
तोरा[1] सबों पर इनका, यों कहे कुरान रोसन ॥६८॥

तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन ।
बृज रास प्रभात को, ए बुधजी को रोसन ॥६९॥

ब्रह्मलीला ब्रह्मसृष्ट में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद ।
प्रेम लच्छ दोऊ कहे, किए जाहेर बुधजीएँ भेद ॥७०॥

१. हूकूमत ।

साहेब के संसार में, आए तीन सरूप ।
सो कुरान यों केहेवहीं, सुंदर रूप अनूप ॥७१॥

एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढ़ापन ।
सुंदरता सुग्यान की, बढ़त जात अति घन ॥७२॥

ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन ।
यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन ॥७३॥

ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन ।
खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन ॥७४॥

श्री कृष्णजीएँ बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम ।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम ॥७५॥

चौथा सरूप ईसा रूहअल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम ।
पाँचमां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम ॥७६॥

ए भी पाँच सरूप का, है बेवरा मांहें कुरान ।
जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान ॥७७॥

एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान ।
सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान ॥७८॥

वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन ।
एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन ॥७९॥

हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम ।
कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम ॥८०॥

मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम ।
लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम ॥८१॥

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान[1] ।
किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान[2] ॥८२॥

१. बाइबिल । २. ईसाई ।

यों लड़ के लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए ।
रब आलम का ना टरे, जो सिर पटके कोए ॥८३॥

यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत ।
ए माएने मगज इमाम पे, दूजा कौन खोले मारफत ॥८४॥

यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम ।
सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम[१] ॥८५॥

सुर असुर अद्यापि[२] के, करत लड़ाई दोए ।
ए द्वेष साहेब बिना, मेट ना सके कोए ॥८६॥

द्वेष जो लाग्या पेड़ से, सब सोई रहे पकर ।
साधो द्वेष मिटावने, उपाय थके कर कर ॥८७॥

कई अवतारों बल किए, कई बल किए तीर्थंकर ।
द्वेष अद्यापी[३] ना मिट्या, कई फरिस्ते पैगंमर ॥८८॥

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन ।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन ॥८९॥

ब्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और ।
वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर ॥९०॥

दो बेटे रूह अल्लाह के, एक नसली और नजरी ।
भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द[४] पैगंमरी ॥९१॥

वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान ।
मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान ॥९२॥

मेटन लड़ाई बन्दन[५] की, और जादे[६] पैगंमर ।
धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त धर ॥९३॥

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध ।
मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध ॥९४॥

१. भेद । २. आदिकाल से । ३. मूल से । ४. गादी । ५. उपासक । ६. वंशज, पुत्र ।

सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद ।
सुख तो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद ॥९५॥

वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल ।
मगज माएने जाहेर किए, माहें गुझ हुते जो बोल ॥९६॥

अंजील जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरकान ।
ए माएने मगज गुझ थे, सो जाहेर किए बयान ॥९७॥

ए कागद उमत ब्रह्मसृष्ट को, सोभा आई तिन पास ।
माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास ॥९८॥

जब हक हादी जाहेर भए, और अर्स उमत ।
सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत ॥९९॥

कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल ।
फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल ॥१००॥

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन ।
रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन ॥१०१॥

हाँसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन ।
मेला अति बड़ा हुआ, आखिर सुख सबन ॥१०२॥

बिना सुख कोई न रह्या, सब मन काम पूरन ।
अंधेरी कछू न रही, भए चौदे तबक रोसन ॥१०३॥

मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन ।
ए सब बीच द्वैत[1] के, निराकार निरंजन सुंन ॥१०४॥

वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच ।
सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच ॥१०५॥

अछरब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फरिस्तों नूर ।
घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर ॥१०६॥

१. प्रकृति ।

और धाम अछरातीत, नूरतजल्ला अर्स ।
रूह बड़ी ब्रह्मसृष्ट की, जो है अरस-परस ॥१०७॥

ए लीला सब प्रगट करी, महंमद ईसा बुधजी आए ।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए ॥१०८॥

भिस्त दई सबन को, चढ़े अछर नूर की दृष्ट ।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट ॥१०९॥

दूजी सृष्ट जो जबरूती, जो ईस्वरी कही ।
अधिक सुख अछर में, दिल नूर चुभ रही ॥११०॥

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टी घर धाम ।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम ॥१११॥

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर ।
रूहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर[१] ॥११२॥

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल ।
सो बुधजीएँ मारया, जो त्रैलोकी का काल ॥११३॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥७५५॥

कुरान की कहूं

अब कहूं कुरान की, सब विध हकीकत ।
मगज मायने खोले बिना, क्यों पाइए मारफत ॥१॥

बिध सारी यामें लिखी, जाथें न रहे अग्यान ।
माएने ऊपर के लेय के, कर बैठे अपना कुरान ॥२॥

आरबों सों ऐसा कह्या, कागद ए परवान ।
आवसी रब आलम का, तब खोलसी कुरान ॥३॥

कागद[२] में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब ।
अंदर अर्थ खोलसी, सब जाहेर होसी तब ॥४॥

१. जड़ चेतन । २. धर्मग्रन्थ ।

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन ।
माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन ।।५।।

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए ।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए ।।६।।

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत ।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित ।।७।।

गुझ अर्थ यामें लिखे, सो समझे कैसे कर ।
अर्थ ऊपर का लेय के, अकस[१] लेत दिल धर ।।८।।

बड़ी सोभा अहेल[२] किताब की, लिखी मिने कुरान ।
सो आरब जाने आपको, ए जो धनी फुरमान ।।९।।

अहेल किताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान ।
फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान ।।१०।।

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार ।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार ।।११।।

एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब ।
फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब[३] ।।१२।।

सहूर न करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक ।
और बहत्तर नारी[४] कहे, पर पावें नहीं विवेक ।।१३।।

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर ।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर ।।१४।।

कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल ।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल ।।१५।।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत ।
सो धनी आए जहूदों[५] मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त ।।१६।।

१. प्रतिविम्ब । २. हकदार, वारिस । ३. पद । ४. दोजखी । ५. हिन्दुओं ।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें ।
जाहेर परस्त[1] जो आरब, सो इसारत समझत नाहें ॥१७॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥७७२॥

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए

बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन ।
कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन ॥१॥

कई पढ़ पढ़ काजी हुए, कई आलम[2] आरिफ[3] ।
माएने मगज मुसाफ के, किन खोल्या ना एक हरफ ॥२॥

लिख्या जाहेर कुरान में, और माजजे[4] सब रद ।
सांचा माजजा इमाम पे, जो ले उतर्‌या अहमद ॥३॥

करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए ।
लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए ॥४॥

पढ़्या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब ।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब ॥५॥

ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान ।
रूह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान ॥६॥

जो लों माएने मगज न पाइया, तो लों पढ़्या न किन कुरान ।
किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान ॥७॥

जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान ।
यों जंजीरां मुसाफ की, कई विध करी बयान ॥८॥

अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बुजरक ।
सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक ॥९॥

हुकम हुआ तिन को, कर सिजदा आदम पर ।
माएने मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर ॥१०॥

१. बाह्य अर्थ लेने वाले । २. विद्वान । ३. ज्ञानी । ४. चमत्कार ।

लानत हुई तिन को, हुआ गले में तौक[1] ।
यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक ॥११॥

तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस गेहूं खिलाए ।
काढ्या प्यारी भिस्त से, दुस्मन संग लगाए ॥१२॥

ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल ।
तो फुरमाया ना करें, वे खैंचे पेड़ असल ॥१३॥

ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान ।
सो ए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान ॥१४॥

दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएनें जाहेर ।
अंदर अर्थ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखिर ॥१५॥

निसान कहे इन वास्ते, सो बांधें कौल पर हद ।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद ॥१६॥

कलाम अल्ला के माएने, सो भी कही इसारत ।
ए नसल आदम[2] हवाई[2], क्यों पावे दिन आखिरत ॥१७॥

माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए ।
सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए ॥१८॥

नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर ।
ईसा मेंहेदी महंमद, आए हिंद में बरस्या नूर ॥१९॥

नूर खुदा रोसन हुआ, खैंच छूटी सब तरफ ।
लेत माएने ऊपर के, सो रह्या न कोई हरफ ॥२०॥

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम ।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम ॥२१॥

अल्लफ कह्या महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम ।
मीम मेंहेदी पाक से, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ॥२२॥

१. फंदा । २. आदम और हव्वा के वंशज ।

महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम ।
बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम ॥२३॥

माएने इन मुसाफ के, कलाम अल्ला का कौल ।
ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल ॥२४॥

बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए ।
बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड़्या कोए ॥२५॥

कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज[१] ।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज[२] ॥२६॥

चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन ।
अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन ॥२७॥

ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान ।
माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान ॥२८॥

काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए ।
तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए ॥२९॥

दाभ-तूल-अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर ।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर ॥३०॥

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन ।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन ॥३१॥

उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर ।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर ॥३२॥

कही दाभा[३] वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान[४] ।
जोलों स्याम बरारब ना हतें, ना रसूल खबर फुरमान ॥३३॥

जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन ।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन ॥३४॥

१. दिन । २. रात । ३. पशुवत । ४. असुर ।

ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर ।
सो नूर फिरया खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर ॥३५॥

सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक[१] ।
तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक ॥३६॥

मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह ।
यों मसरक[१] और मगरब[२], दोनों दुरस्त कह्या ॥३७॥

रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब ।
सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब ॥३८॥

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब ।
जाहेरी ढूंढ़ें सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब ॥३९॥

ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद ।
काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद ॥४०॥

ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ ।
आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ ॥४१॥

दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर ।
ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर ॥४२॥

ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल ।
जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल ॥४३॥

आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर ।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर ॥४४॥

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर ।
तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर ॥४५॥

जब जहूर[३] जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर ।
तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर ॥४६॥

१. पूर्व । २. पश्चिम । ३. तेज ।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए ।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए ॥४७॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥८१९॥

सूरत[१] मीजान[२] की

केहेती हों उमत[३] को, सुनसी सब संसार ।
मकसूद[४] तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार ॥१॥
फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक ।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक ॥२॥
वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम ।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम ॥३॥
मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूहअल्ला मिले मुझ ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ ॥४॥
इलम दिया मोहे लदुन्नी, आई असल अकल ।
सेहेरग से नजीक, पाया अर्स असल[५] ॥५॥
और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत ।
पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत ॥६॥
पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम ।
सक जरा ना रही, पाया कायम[६] आराम ॥७॥
अब करूं बका जाहेर, वास्ते अर्स उमत के ।
कहूं अर्स और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए ॥८॥
अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अर्स के ।
ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे ॥९॥
नासूत और मलकूत का, निमूना देखकर ।
ए बल दिल में लेय के, देखो अर्स जानवर ॥१०॥

१. अध्याय - प्रकरण । २. तुला - तराजु । ३. मोमिन । ४. ईच्छापूर्ति । ५. परमधाम की मूल बुद्धि । ६. शाश्वत ।

एक जानवर अर्स का, मैं तौल्या तिन का बल ।
क्यों कहूं तफावत[1], ओ फना ए नेहेचल ॥११॥

लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत[2] बल बुद्ध जेता ।
दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदर में एता ॥१२॥

ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत ।
आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत ॥१३॥

कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते ।
ए जवाब है तिनको, देखो पटंतर[3] ए ॥१४॥

आगूं कायम अर्स के, है चौदे तबक यों कर ।
ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर ॥१५॥

जो कछु पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना ।
सो क्यों कही जाए कायम को, जो वस्त है झूठ फना ॥१६॥

तो कह्या सब्दातीत को, हद सब्द पोहोंचत नाहें ।
ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें ॥१७॥

कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित ।
एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं ताथें दुख पावत ॥१८॥

मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त ।
इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत ॥१९॥

ताथें सिफत मैं क्यों करूं, अर्स अजीम की ख्वाब में इत ।
एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित ॥२०॥

ताथें अर्स और दुनी के, तफावत जानवर ।
कायम और फना की, क्यों आवे बराबर ॥२१॥

चुप किए भी न बने, समझाए ना बिना मिसल[4] ।
पसु पंखी अर्स और खेल के, देखो तफावत बल ॥२२॥

१. अन्तर । २. बुद्धिमता । ३. तुलना । ४. निमुना, दृष्टान्त ।

इत अंगद बाल सुग्रीव, गरूड़ जाबूं हनुमान ।
ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान ॥२३॥

लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर ।
राम कृष्ण इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर ॥२४॥

अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत ।
लोक जिमी आसमान के, ऐ देखो तफावत ॥२५॥

बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर ।
गरूड़ बल ऐसा रखे, चले विष्णु मन पर ॥२६॥

देख बल इन खावन्द का, जो मलकूत में बसत ।
कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बन्दों को बकसत ॥२७॥

ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर ।
ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठें मिटें सागर ॥२८॥

नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर ।
सो मलकूत के एक खिन में, कई कोट जात मर मर ॥२९॥

नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर ।
तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर ॥३०॥

दरिया ला मकान[1] का, तिनकी लेहेर मलकूत[2] ।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत[3] ॥३१॥

ए तले ला मकान के, दोऊ फना के मांहें ।
ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहें ॥३२॥

विष्णु ब्रह्मा रूद्र की, साहेबियां बुजरक ।
ए चौदे तबक की दुनियाँ, जाने याही को हक ॥३३॥

बिना हिसाबें उमतें, करें सिफतें अनेक ।
सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक ॥३४॥

१. शून्य निराकार । २. वैकुंठ । ३. मृत्यु लोक ।

खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन ।
कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुन ॥३५॥

ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढ़ें हक को अटकल[1] ।
रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल ॥३६॥

ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फरिस्ते समेत ।
सिफत कर कर आखिर, कहे नेत नेत नेत ॥३७॥

करें कोट मलकूती सिफतें, देख नूरजलाल[2] कुदरत ।
तो पट आड़ा ना टरे, कई कर कर गए सिफत ॥३८॥

ए सबें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल ।
ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल ॥३९॥

इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से ।
यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किन ने ॥४०॥

अब देखो बल महंमद का, दई दुनियां को सरीयत ।
कह्या आखिर रब आवसी, खोलसी हकीकत ॥४१॥

आवसी उमत अर्स से, ए खेल को देखन ।
करें हक को जाहेर, सब का एह कारन ॥४२॥

कायम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल ।
करें उमत अर्स की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल ॥४३॥

जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए ।
भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए ॥४४॥

ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए ।
तो आखिर आए सबन को, दई हैयाती पोहोंचाए ॥४५॥

बारे हजार उमत की, रूहें जो इप्तदाए[3] ।
जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए ॥४६॥

१. अनुमान । २. अक्षरब्रह्म । ३. आरंभ से (मूल परमधाम की) ।

आप बैठे बीच में, ले अपनी तीन सूरत ।
ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोंचत ॥४७॥

ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर ।
नासूत मलकूत ला परे, पोहोंचे अपने घर ॥४८॥

एह बल महंमद के, जानवर का जान ।
दूजी गिरो फरिस्ते, पोहोंचाई नूर मकान ॥४९॥

गिरो फरिस्ते इत रहे, जबराईल मकान ।
एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान ॥५०॥

जो रूहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत ।
ले पोहोंचे नूरतजल्ला[१], महंमद तीन सूरत ॥५१॥

खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन ।
इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने कायम वतन ॥५२॥

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत ।
ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत ॥५३॥

क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर हैं महंमद ।
ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद ॥५४॥

कायम जिमी अर्स की, सांची जो साबित ।
पसु पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत ॥५५॥

कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक ।
तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक ॥५६॥

बिना हिसाबें जानवर, पसु बिना हिसाब ।
ए बल दिल में लेय के, तौलो निमूना ख्वाब ॥५७॥

कोट इंड की दुनीय का, कूवत[२] बल हिकमत ।
अपार अर्स के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत ॥५८॥

१. अक्षरातीत । २. सामर्थ्य, शक्ति ।

अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन ।
झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुंन ॥५९॥

ए बल सब्दातीत को, सो सांचे हैं सूर ।
और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर[1] ॥६०॥

सांच झूठ पटंतरो[2], कबहूं कह्यो न जाए ।
सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों तराजू तौलाए ॥६१॥

मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत ।
झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत ॥६२॥

कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए ।
सो नूर नजर देख के, एक खिन में दें उड़ाए ॥६३॥

ओ जाने हम कदीम[3] के, आद हैं असल ।
कई चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल ॥६४॥

कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत[4] ।
ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत ॥६५॥

झूठ तो कछुए है नहीं, सांच कायम साबित ।
यों अर्स और दुनीय के, कौन निमूना इत ॥६६॥

बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें ।
तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्याहें ॥६७॥

ऐसे अति जोरावर, जो रेहेत हक हजूर ।
तो मुख से सब्द ना केहे सकों, इन बल हक जहूर ॥६८॥

जो बसत अर्स जिमिएँ, या नजीक या दूर ।
रात दिन इन के अंग में, बरसत हक का नूर ॥६९॥

यों अर्स के जानवर, सो सारे ही पेहेलवान ।
बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान ॥७०॥

१. चर्चा । २. तुलना । ३. प्राचीन काल । ४. प्रकृति, अक्षर की माया ।

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नाहीं सुमार ।
नजरों अमी[1] रस पीवत, अर्स खावंद सींचनहार ॥७१॥

कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार ।
जिनका सका[2] साहेब, पल पल सींचनहार ॥७२॥

ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूंके देवे तोड़ ।
तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड़ ॥७३॥

उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर ।
उड़ जाएँ इन के वाउ सों, जब ए उठावें पर ॥७४॥

ए निमूना अर्स ख्वाब[3] का, देखो तफावत ।
देखो अकल असल की, जो होवे अर्स उमत ॥७५॥

उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक ।
देने पेहेचान गिरो को, यासे जाने हक ॥७६॥

पावने बुजरकी अर्स की, और बुजरकी खुदाए ।
पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इप्तदाए ॥७७॥

सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे ।
अर्स लज्जत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए ॥७८॥

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
विचार देखो हादीय की, वानी ले दिल मों ॥७९॥

गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नांहें ।
सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अर्स के माहें ॥८०॥

जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक ।
इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख ॥८१॥

जो कछू अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए ।
और खेलौने बगीचे, सो सब जातै के इप्तदाए ॥८२॥

१. अमृत । २. पिलानेवाला । ३. सपना ।

न अर्स जिमिएँ दूसरा, कोई और धरावे नाउ ।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं ॥८३॥

और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए ।
एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इप्तदाए[1] ॥८४॥

और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए ।
ए खेल है खावंद के, ए जो चली कतारें जाए ॥८५॥

ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नांहें ।
ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए ॥८६॥

ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार ।
सो ला ही लिए जात हैं, ज्यों चले चींटी हार ॥८७॥

बड़ी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक ।
लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक ॥८८॥

झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल ।
खेल देखे पाइयत हैं, खुद खावंद का बल ॥८९॥

असल आदिमयों मिने, कोई पाइए उमत का एक ।
ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक ॥९०॥

अब कहूं मैं तिन को, अर्स खावंद की बात ।
खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात ॥९१॥

जो उतरे हैं अर्स अजीम से, रूहें और फरिस्ते ।
कहिए जात खुदाए की, असल हैं अर्स के ॥९२॥

ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए ।
एही हकुल्यकीन[2], जो अर्स दरगाह के होए ॥९३॥

सो फुरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अर्स से ।
उतरते अरवाहों सों, कौल किया हक ने ॥९४॥

१. शुरु से । २. अटल विश्वास ।

कह्या उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रब-कुंम ।
फेर कह्या अरवाहों ने, वले न भूलें हम ॥९५॥

ए देत अर्स निसानियां, याद आवसी तिन ।
सरत करी खावंद ने, उतरते अर्स रूहन ॥९६॥

अब जो असल उमत का, ताए देऊँ अर्स निसान ।
इन विध देऊँ साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान ॥९७॥

कलाम अल्ला की साहेदी, और हदीसें महंमद ।
तुमें कहूं तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद ॥९८॥

नूर आवें दीदार को, लेने सुख सुभान ।
ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान ॥९९॥

नूरें चाह्या दिल में, देखूं इस्क रूहन ।
तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन ॥१००॥

खेल किया तुम वास्ते, देखो दिल में आन ।
ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान ॥१०१॥

विचारो रूहें अर्स की, जो देखाई झूठ नकल ।
देखो तफावत दिल में, ले अपनी असल अकल ॥१०२॥

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम ।
पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम ॥१०३॥

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग ।
अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग ॥१०४॥

कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल ।
तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल ॥१०५॥

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और ।
कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर ॥१०६॥

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन ।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन ॥१०७॥

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के ।
हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते ॥१०८॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥९२७॥

अर्स अजीम की हक मारफत-महाकारन

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम ।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम ॥१॥

और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए ।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए ॥२॥

हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत ।
नूर मकान जाहेर करूं, ए एकै जात सिफत ॥३॥

महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर ।
ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर ॥४॥

ए जो सदरतुल-मुंतहा[१], ए है कायम[२] अर्स ।
ए जात सिफात[३] एकै, ए हैं अरस-परस ॥५॥

नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात ।
और बाग जोए[४] हौज कौसर, ए साहेबी अर्स सिफात ॥६॥

पार ना अर्स जिमी का, ना बागों का पार ।
पार ना पसु पंखियन को, ना कछू खेल सुमार ॥७॥

पार न बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए ।
पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए ॥८॥

एक पात बिरिख[५] को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर ।
ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर ॥९॥

१. अक्षरधाम । २. अखंड । ३. गुण, विशेषता । ४. जमुनाजी । ५. वृक्ष ।

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन ।
सो वास्ता[1] कहूं इन भांत सों, ज्यों होए सबे रोसन ॥१०॥

नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम ।
होए पल में पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम ॥११॥

अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात ।
बिना कुदरत[2] कादर[3] की, क्यों पाइए सिफात ॥१२॥

इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत ।
ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत ॥१३॥

खेल में कई मुद्दत, होत है दुनियां को ।
कई कोट होत पैदा फना, नूर के निमख मों ॥१४॥

जब कछू पैदा ना हुआ, जिमी या आसमान ।
सो हुकम तब ना हुआ, जिन थें उपजी जहान ॥१५॥

अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते ।
फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फरिस्ते ॥१६॥

ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान ।
चौदे तबक भई दुनियां, आखिर फना निदान ॥१७॥

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत ।
आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत ॥१८॥

अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात ।
करसी दुनियां कायम, ए महंमद की सिफात[4] ॥१९॥

रूह अल्ला उतरे अर्स से, होए काजी लेसी हिसाब ।
दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब ॥२०॥

महंमद मेंहेदी आवसी, करसी इमामत ।
बका पर सिजदा गिरोह[5] को, करावसी आखिरत ॥२१॥

१. कारण । २. माया । ३. सामर्थ अक्षरब्रह्म । ४. गुण विशेषता । ५. समस्त समुदाय ।

सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें ।
किस वास्ते हुकम किया, ए ना कह्या किन ने ॥२२॥

अब देखो दुनियां जाहेरी, करम कांड सरीयत ।
इनके इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत ॥२३॥

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक[१] ।
तो ए हुकम किन ने किया, जो सूरत नाहीं हक ॥२४॥

न ठौर ठेहेरावें अर्स को, ना हक की सूरत ।
हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित ॥२५॥

हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर ।
रद-बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करी हजूर ॥२६॥

हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार ।
तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार ॥२७॥

और तीस गुझ रखो, वे आखिर पर मुद्दार ।
सो हम आए के खोलसी, अर्स बका के द्वार ॥२८॥

सो साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल ।
भिस्त दरवाजे कायम[२], सब को देसी खोल ॥२९॥

काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार ।
तो भी ईमान न दुनी को, जो एती करी पुकार ॥३०॥

ऐसा ईमान इन दुनी का, कहे महंमद को बरहक[३] ।
और महंमद के फुरमाए में, फेर तिन में ल्यावें सक ॥३१॥

महंमद बातें हक सों, पोहोंच के करी हजूर ।
दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर ॥३२॥

और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तकरार[४] तीन ।
हादी हुकमें रूहें फरिस्ते, बीच नाजल[५] इसलाम दीन ॥३३॥

१. बिलकुल । २. अखंड । ३. सच्चा । ४. हिस्सा । ५. अवतरण (उतरनेवाले) ।

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर ।
गिरो उतरी अर्स से, जो चढ़ी किस्ती पर ॥३४॥

दो तकरार पेहेले कहे, जो गुजरे मांहें लैल ।
तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥३५॥

दसमी लग रोज रब का, सो दुनी के साल हजार ।
कह्या बेहेतर[1] महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार ॥३६॥

महंमद मेंहेदी ईसा नाजल, असराफील जबराईल ।
रूहें फरिस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील ॥३७॥

रहे साल चौरासी लैल में, तिन उपर हुई फजर ।
अग्यारैं सदी मिने, मेरी बातून[2] खुली नजर ॥३८॥

चौदे तबकों न पाइया, अर्स हक का कित ।
सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत ॥३९॥

अर्स ना चौदे तबक में, सो लिए इलम ईसा के ।
नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अर्स बैठाए ले ॥४०॥

और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम ।
तूं रूह हैं अर्स अजीम की, तुझ को दिया हुकम ॥४१॥

गिरो आई लैल के खेल में, सो तुमें मिलसी आए ।
दिल साफ इनों के करके, अर्स में लीजे उठाए ॥४२॥

ए बात मैं दिल में लई, तब महंमद हुए मेहेरबान ।
हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान ॥४३॥

सब सुध भई अर्स की, हुई हक सों निसबत ।
गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अर्स न्यामत[3] ॥४४॥

ए सुकन पेहेले लिखे, बीच कतेब वेद ।
सो ए करत हों जाहेर, जो दिया दोऊ हादियों भेद ॥४५॥

१. अधिक । २. अंतरदृष्टि । ३. अलभ्य पदार्थ ।

रूहें बेनियाज[1] थीं, बीच दरगाह बारे हजार ।
जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार ॥४६॥

सुध नाहीं दुख सुख की, ना सुध विरह मिलाप ।
ना सुध बुजरक अर्स की, खबर न खावंद आप ॥४७॥

साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर ।
ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर ॥४८॥

ना सुध दोस्त ना दुस्मन, ना सुध नफा नुकसान ।
ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान ॥४९॥

तिस वास्ते खेल देखाइया, ए बात दिल में आन ।
झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान ॥५०॥

सांची साहेबी हक की, कोई नाहीं दूजा और ।
झूठ नकल देखे बिना, पावे ना अर्स ठौर ॥५१॥

बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत[2] ।
कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत ॥५२॥

यों जान बीच बका मिने, दिल में ल्याए हक ।
नूर-जलाल[3] रूहन को, देखें असल इस्क ॥५३॥

और लिया ए दिल में, जो अरवाहें अर्स की ।
दूजी बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥५४॥

जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक ।
तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक ॥५५॥

असल होए जित अकेला, और होए नाहीं नकल ।
सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल ॥५६॥

जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख ।
ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख ॥५७॥

१. बेखबर । २. फर्क । ३. अक्षरब्रह्म ।

सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद के छूट ।
सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ ॥५८॥

दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए ।
तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए ॥५९॥

जित साहेब होवे एकला, ना साहेदी[१] दूजे बिन ।
बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन ॥६०॥

तो कह्या खुदा एक है, और महंमद कह्या बरहक ।
सो न आवे ख्वाबी[२] दम पर, जो लो होए न रूहें बुजरक ॥६१॥

ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम ।
महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम ॥६२॥

जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत ।
अर्स रूहें फरिस्ते, हुई हक की मारफत ॥६३॥

लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची कयामत ।
भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत ॥६४॥

इन बिध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी ।
देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥६५॥

हकें देखाई अर्स साहेबी, हादी रूहों को यों कर ।
दुई देखाई झूठ ख्वाब में, पावने पटंतर[३] ॥६६॥

चढ़ना है नासूत[४] से, तिन ऊपर है मलकूत[५] ।
तिन पर ला-मकान[६] है, तिन पर नूर बका[७] साबूत ॥६७॥

कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत ।
खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत ॥६८॥

कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत ।
नूर सिफत कर कर गए, पर आगे ना पोहोंचत ॥६९॥

१. साक्षी । २. माया के जीव । ३. फर्क । ४. मृतलोक । ५. बैकुंठ । ६. निराकार । ७. अखंड ।

वेदें नाम धरे खेल के, पूत बंझा सींग ससक[१] ।
आकास फूल इनको कह्या, एक जरा न रखी रंचक ॥७०॥

कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला[२] ।
ए कुंन केहेते हो गया, सो कयामत को फना ॥७१॥

जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर ।
इन की सहूर सुरिया लग, सो हकें पोहोंचे क्यों कर ॥७२॥

कहे कबूतर खेल के, खेल सरीक[३] हक का ।
हक हमेसा वेद कतेब में, खेल तीनों काल फना ॥७३॥

एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें ।
न सरीक न निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों मांहें ॥७४॥

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक ।
जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक ॥७५॥

झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत ।
ए झूठ खेल देखाइया, लेने हक लज्जत ॥७६॥

कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल ।
ऐसी नूर जलाल[४] की, कुदरत रखे बल ॥७७॥

तिन से कायम होत है, सदरतुलमुंतहा जित ।
होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत ॥७८॥

सदरतुलमुंतहा[५] थें, आवत नूर-जलाल ।
जित है अर्स अजीम, खावंद नूर-जमाल ॥७९॥

सो नूर नूरतजल्ला[६] के, दायम आवे दीदार ।
इन दरगाह में उमत, रूहें बारे हजार ॥८०॥

एह मरातबा[७] रूहन का, जिन का हादी अहमद ।
मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद[८] ॥८१॥

१. खरगोस । २. नाशवंत । ३. बराबरी का । ४. अक्षरब्रह्म । ५. अक्षरधाम । ६. पूर्ण ब्रह्म (अक्षरातीत) ।
७. बुजरकी । ८. एक ।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार ।
ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार ॥८२॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥१००९॥

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत ।
कौल किया था हक ने, सो आई कयामत ॥१॥

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत ।
फुरमान फकीरों सफकत[१], ले आवे दुनी बरकत ॥२॥

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखिर ।
जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर ॥३॥

आए लैल के खेलमें, लेने अर्स लज्जत ।
सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत ॥४॥

आपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नाहीं सुमार ।
दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार ॥५॥

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत ।
हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दई गफलत ॥६॥

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम ।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम ॥७॥

अर्स बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख ।
ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख ॥८॥

असल आराम हिरदे मिने, अर्स को अखंड ।
तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड ॥९॥

कायम हक के अर्स में, बैठे अपने ठौर ।
हक के इत वाहेदत[२] में, कोई नाहीं काहूं और ॥१०॥

१. कृपा । २. एक दिली, एकत्व ।

महामत कहे ए मोमिनों, इस्क लीजे हक ।
असल अर्स के बीच में, हक का नाम आसिक ॥११॥

॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥१०२०॥

किताब कुरानकी, इनमें एते बाब हैं-खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, मेयराजनामे का, खुलासा इसलाम का, भिस्त सिफायत का बेवरा, हक की सूरत का, नाजी फिरके का, रूहों की बिने, नूर-नूरतजल्ला, जहूरनामा, दोनामा, मीजान अर्स अजीम की महाकारन, मोमिन आए अर्स अजीम से, दोनामा के प्रकरण पांच किताब तमाम ।

चौपाइयों तथा प्रकरणों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण ३६५, चौपाई ९४८२

॥ खुलासा सम्पूर्ण ॥